G20 भारत 2023 INDIA

यूको अनुगूँज

यूको बैंक की हिन्दी गृह पत्रिका

वर्षः 14 अंकः 1 अप्रैल - जून -2023

आठ दशक और आगे...

यूको बैंक UCO BANK
(भारत सरकार का उपक्रम) (A Govt. of India Undertaking)

सम्मान आपके विश्वास का Honours Your Trust

शिवमंगल सिंह 'सुमन'

5 अगस्त, 1915 को उत्तर प्रदेश के उन्नाव ज़िले के झगरपुर ग्राम में जन्मे शिवमंगल सिंह 'सुमन' को आधुनिक काल (प्रगतिवादी युग) का कवि माना जाता हैं। उन्हें डी. लिट् की मानद उपाधि के साथ-साथ पद्मभूषण अलंकरण, देव पुरस्कार, सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार, 'मिट्टी की बरात' के लिए शिखर सम्मान, भारत भारती पुरस्कार आदि से सम्मानित किया गया है। सुमनजी एक समर्पित अध्यापक तो थे ही अपने सामाजिक सरोकारों के प्रति भी सचेत थे। वे साहित्य प्रेमियों में ही नहीं अपितु जन-सामान्य में भी लोकप्रिय थे। उनकी काव्यधारा तथा वाग्विदग्धता समानांतर चलती थी। उनकी वाणी में तथ्य, उदाहरण, परंपरा, इतिहास, साहित्य, वर्तमान जीवंत हो उठता था। उनकी काव्यधारा श्रोता को अंदर तह भिगो जाती थी। आधुनिक युग में हिन्दी कविता की वाचिक परंपरा आपकी लोकप्रियता से पुष्ट तथा लोकप्रिय हुई है। शिवमंगल सिंह 'सुमन' ने अनेक पदों को सुशोभित किया। वे विक्रम विश्वविद्यालय (उज्जैन) के कुलपति , उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ के उपाध्यक्ष, भारतीय दुतावास, काठमांडू (नेपाल) में प्रेस और सांस्कृतिक अटैशे, भारतीय विश्वविद्यालय संघ (नई दिल्ली) के अध्यक्ष तथा कालिदास अकादमी, उज्जैन के कार्यकारी अध्यक्ष रहे।

हिल्लोल, जीवन के गान, युग का मौल, प्रलय सृजन, विश्वास बढ़ता ही गया, विंध्य हिमालय, मिट्टी की बारात, वाणी की व्यथा कालक्रमानुसार उनके प्रमुख काव्य संग्रह हैं।

निधन: 27 नवम्बर, 2002

वरदान माँगूँगा नहीं

यह हार एक विराम है
जीवन महासंग्राम है
तिल-तिल मिटूँगा पर दया की भीख मैं लूँगा नहीं ।
वरदान माँगूँगा नहीं ।।

स्मृति सुखद प्रहरों के लिए
अपने खण्डहरों के लिए
यह जान लो मैं विश्व की सम्पत्ति चाहूँगा नहीं ।
वरदान माँगूँगा नहीं ।।

क्या हार में क्या जीत में
किंचित नहीं भयभीत मैं
संघर्ष पथ पर जो मिले यह भी सही वह भी सही ।
वरदान माँगूँगा नहीं ।।

लघुता न अब मेरी छुओ
तुम हो महान बने रहो
अपने हृदय की वेदना मैं व्यर्थ त्यागूँगा नहीं ।
वरदान माँगूँगा नहीं ।।

चाहे हृदय को ताप दो
चाहे मुझे अभिशाप दो
कुछ भी करो कर्त्तव्य पथ से किन्तु भागूँगा नहीं ।
वरदान माँगूँगा नहीं ।।

यूको अनुगूँज

यूको बैंक की तिमाही हिंदी गृह पत्रिका
वर्ष-14, अंक-1
अप्रैल-जून, 2023

संरक्षक
अश्वनी कुमार
प्रबंध निदेशक एवं
मुख्य कार्यपालक अधिकारी

प्रेरणा
राजेन्द्र कुमार साबू
कार्यपालक निदेशक

दिग्दर्शन
मनीष कुमार
महाप्रबंधक
मानव संसाधन प्रबंधन एवं राजभाषा

संपादक
अजयेन्द्रनाथ त्रिवेदी
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल
सत्येन्द्र कुमार शर्मा
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

रोशनी सरकार साव
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

राम अभिषेक तिवारी
प्रबंधक (राजभाषा)

यूको बैंक, राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय,
10 बी टी एम सरणी, कोलकाता-700001

ई-मेल :
horajbhasha.calcutta@ucobank.co.in
फोन : 033-4455 7384

एक टीम –एक स्वप्न – एक लक्ष्य

इस अंक में दिए गए विचार लेखकों के हैं, संपादक मंडल तथा यूको बैंक के नहीं। इन विचारों से संपादक मंडल अथवा यूको बैंक की सहमति हो ही यह आवश्यक नहीं है।

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश	2
कार्यपालक निदेशक का संदेश	3
महाप्रबंधक-राजभाषा का संदेश	4
स्वागत नए प्रबंध निदेशक एवं सीईओ का	5
संपादकीय	6
आमुख लेख	
बैंक के आठ दशक के विश्वास और एकजुटता की अविरल गाथा - विशाल कुमार	7
यूको बैंक के 8 दशक - सुभाष चंद्र साह	12
यूको बैंक की विकास यात्रा - प्रतीक रमोला	16
यूको बैंक के प्रतीक चिह्न की यात्रा के 8 दशक – नील कमल	17
यूको बैंक : सम्मान आपके विश्वास का (कविता)- अंकिता	18
यात्रा वृत्तांत	
विंध्यावटी - आशिमा गुप्ता	19
पुस्तक समीक्षा	21
बाल वीथिका	23
बैंकिंग लेख	
भारतीय कृषि में सरकार की पहल- हंसराज ठाकुर	24
एक मुलाकात: श्री हिमाद्रि दत्त, पूर्व महाप्रबंधक	28
कविताई	
माँ – ओंकार नाथ ठाकुर, अमित प्रसून	32
विविध	
कौटिल्य अर्थशास्त्र - अमरदीप कुलश्रेष्ठ	33
भोजनम्	35
विविध गतिविधियां	
संसदीय समिति – शिमला	36
संसदीय समिति- रायपुर	
संसदीय समिति- लखनऊ	
राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक	37
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक	
कार्यशाला – अंचल	38
कार्यशाला –प्रधान कार्यालय	39
बैंकिंग गतिविधियां	40
पत्र मिला	42

यूको बैंक
UCO BANK

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी की कलम से

प्रिय यूकोजन,

यूको परिवार में शामिल होने के बाद 'यूको अनुगूँज' के माध्यम से आपसे पहली बार संवाद करते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। इस बीच अनेक अवसरों पर आप सबसे मिलने का अवसर मुझे मिला है तथा उन अवसरों पर मैंने आपसे संवाद भी किया है। सौभाग्य से मैं सार्वजनिक क्षेत्र के एक समृद्ध विरासत बैंक से जुड़ गया हूँ। इस विरासत को आगे ले जाने के लिए जो जनशक्ति हमारे पास है उसकी बहुमुखी प्रतिभा को देखकर मुझे संतोष हुआ है। मुझे लगा है कि समृद्धि की ओर बैंक की कार्ययोजना को रूपायित करने के लिए इस जनशक्ति के कौशल विकास की ओर भी हमें ध्यान देना होगा।

सूचना-संजाल के माध्यम से आज विश्व पहले की अपेक्षा कहीं अधिक निकट आ गया है। हमारे तथा हमारे ग्राहक के बीच संपर्क के अनेक साधन आज उपलब्ध हो गए हैं। इससे अपेक्षाएं बढ़ीं हैं। कारोबार के विकास के लिए हमें अपने ग्राहकों की अपेक्षाओं पर खरा उतरना तथा उनका विश्वास जीतना हमारी प्राथमिकता है। हमारी कार्यप्रणाली की पारदर्शिता तथा सेवा-दक्षता ही ग्राहकों की संतुष्टि तथा विश्वास के आधार हैं। इसी से हमारी पृथक पहचान बनती है। अपनी पृथक पहचान बनाने के लिए हमें ज्ञान प्रबंधन की योजना बनानी होगी ताकि हमें प्राप्त इन्फार्मेशन ज्ञान में परिवर्तित हो सके।

ज्ञानार्जन, ज्ञानसंवर्धन, ज्ञानसंप्रसारण, ज्ञानवर्धन तथा ज्ञान एप्लीकेशन के सोपानों से होते हुए हमें अपने कार्यनिष्पादन में उत्कृष्टता प्राप्त करनी है। इसी से हम अपने कॅरियर को आगे बढ़ाते हुए बैंक को लाभप्रदता की ओर ले जा सकेंगे।

शुभकामनाओं के साथ।

अश्वनी कुमार

कार्यपालक निदेशक की कलम से

प्रिय यूकोजन,

'यूको अनुगूँज' का यह अंक बैंक की आठ दशकों की समर्पित कारोबारी यात्रा पर केंद्रित है। नवें दशक में प्रवेश के साथ हम सधे कदमों से उत्कर्ष की ओर अग्रसर हैं। हमें अपने परिचालन लाभ में और वृद्धि करने तथा लागत-आय अनुपात को 45% तक ले जाने की आवश्यकता होगी। कासा जमाराशि को 40% के स्तर पर ले जाना हमारा लक्ष्य होना चाहिए।

वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के कार्यनिष्पादन पर आई खबरों ने हमें बहुत उत्साहित किया है। एक राष्ट्रीय समाचारपत्र के अनुसार सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का संचयी लाभ 1 लाख करोड़ रुपये का आंकड़ा पार कर गया। इस उपलब्धि को वर्ष 2017-18 में 85,390 करोड़ रुपये की कुल शुद्ध हानि के संदर्भ में देखा जाए तो एक सकारात्मक तस्वीर उभरती है।

हम बैंक में अपने कर्मचारियों की कार्यकुशलता को बढ़ाते हुए सतत वृद्धि दर प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। इसके लिए ग्राहक सेवा में लगातार सुधार किया जाना आवश्यक है। उल्लेखनीय है कि डिजिटलीकरण से ग्राहक सेवा में गुणात्मक सुधार लाने तथा ग्राहक आधार बढ़ाने में बड़ी सहायता मिलेगी।

मैं 'यूको अनुगूँज' के पाठकों से इस दिशा में कदम से कदम मिलाकर चलने का अनुरोध करता हूँ।

शुभकामनाओं के साथ।

राजेन्द्र कुमार साबू

महाप्रबंधक, राजभाषा का संदेश

प्रिय यूकोजन,

भारत सरकार की राजभाषा नीति के तहत कर्मचारियों में राजभाषा हिंदी में लिखने तथा पढ़ने के कौशल के विकास के लिए हिंदी गृह पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जाता है। हमारी हिंदी गृहपत्रिका 'यूको अनुगूँज' इसी उद्देश्य से प्रकाशित की जाती है। इसमें बैंक के स्टाफ सदस्यों में शामिल नवोदित लेखकों से लेकर प्रौढ़ लेखकों तक की रचनाएं प्रकाशित होती हैं। नवोदित लेखक अपनी रचना छपने से उत्साहित होते हैं तथा प्रौढ़ लेखकों की रचनाएं उन्हें अच्छा लिखने की प्रेरणा देती हैं।

मैंने लक्ष्य किया है कि इस गृहपत्रिका की सामग्री तथा इसमें प्रकाशित रिपोर्टें एवं तस्वीरें अभिलेख का अंग बन जातीं हैं। मैं समझता हूँ कि 'यूको अनुगूँज' के प्रकाशन का विगत 14 वर्ष बैंक में राजभाषा प्रबंधन के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कालखंड रहा है। इस अवधि में प्रकाशित 'यूको अनुगूँज' के कुछ अंकों को खास तौर पर याद किया जाता है। ऐसे ही यादगार अंकों में वर्ष 9 का अंक 1 भी था। इसमें 'एक टीम एक स्वप्न' को लेकर आमुख कथा रची गई थी।

मुझे विश्वास है यूको बैंक के आठ दशकों की यात्रा को केंद्र में रखकर प्रकाशित यह अंक आपको पसंद आएगा। मैं इस अंक की प्रस्तुति के लिए राजभाषा विभाग की तत्परता की सराहना करता हूँ। शुभकामनाओं के साथ।

मनीष कुमार

॥ स्वागत ॥

श्री अश्वनी कुमार

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

श्री राजेन्द्र कुमार साबू, कार्यपालक निदेशक द्वारा
हमारे नए एमडी एवं सीईओ का स्वागत

संपादकीय

आठ दशकों की बैंक की यात्रा पूरे होने के उपलक्ष्य में 'यूको अनुगूँज' का यह अंक आपके हाथों में देते हुए हम किंचित संभ्रम में हैं। हम समझ नहीं पा रहे हैं कि इस गुरुतर कार्य को संपादित करने में हम कहाँ तक सफल रहे हैं। इस विषय में पाठक ही प्रमाण होंगे। हम बस इतना ही कहेंगे कि हमने इस संबध में सावधानीपूर्वक सामग्री एकत्र करके आपके समक्ष प्रस्तुत करने का एक प्रयास किया तथा विद्वान लेखकों ने हमारे अनुरोध को मान दिया और इस प्रकार 'यूको अनुगूंज' का यह अंक आपके हाथों में जा रहा है। इस अंक पर आपकी प्रतिक्रिया की उत्सुक प्रतीक्षा रहेगी।

बैंक के कामकाज में राजभाषा हिंदी का उत्तरोत्तर प्रयोग बढ़े इस प्रयोजन से 'यूको अनुगूँज' का प्रकाशन किया जाता है। तकनीक के आगमन के साथ अब हम सूचना के लिए पाठ्य सामग्री की अपेक्षा दृश्य सामग्री को वरीयता देने लगे हैं। इससे पुस्तक तथा पत्रिकाओं को पढ़ने के प्रति रुचि घटी है। समाचारपत्र भी अब पढ़े नहीं 'देखे' जा रहे हैं। देखने की अपेक्षा पढ़ना अधिक एकाग्रता की अपेक्षा करता है। विशेषज्ञों की मान्यता है कि एकाग्रता से प्रभाविता बढ़ती है। अत: हमें यथासंभव पुस्तकों को पढ़ने का अवसर निकालना चाहिए।

इस अंक में हमने कुछ अभिनव सामग्री दी है, यथा पुस्तक समीक्षा तथा आपके पत्रों का स्तम्भ। विगत अंकों पर हमें जबरदस्त पाठकीय प्रतिक्रिया मिली। स्थानाभाव के कारण हम अनेक पत्रों को अविकल प्रकाशित नहीं कर पाए। प्रेस सामग्री तैयार हो जाने के बाद प्राप्त पत्रों को हम चाहकर भी नहीं ले सके। इसका हमें खेद है।

'यूको अनुगूँज' हम सबकी पसंदीदा पत्रिका हो इसके लिए हम सभी यूकोजन का आह्वान करते हैं। आप सबके सहयोग से हम आगामी अंकों को पठनीय तथा संग्रहणीय बना सकें यही कामना है।

आपकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी।

अजयेन्द्रनाथ त्रिवेदी

बैंक के आठ दशक के विश्वास और एकजुटता की अविरल गाथा

आमुख लेख

विशाल कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय, गुवाहाटी

बैंकिंग जगत में यूको बैंक की गणना उन राष्ट्रीयकृत बैंकों में होती है जिनका एक पुराना और सुनहरा इतिहास रहा है। देखा जाए तो भारत में प्राचीन काल से ही बैंकिंग व्यवस्था विद्यमान थी । कौटिल्य के "अर्थशास्त्र" और अबुल फजल के "आइने अकबरी" जैसे ग्रंथ वित्तीय स्थिति से संबंधित विषयों को उजागर करते हैं।

6 जनवरी, 2023 को बैंक ने अपने स्वर्णिम 80 वर्ष पूर्ण किए । यह प्रत्येक यूकोजन के लिए गौरव का विषय है कि पिछले 8 दशकों से बैंक अपने सम्मानित ग्राहकों के विश्वास का सम्मान करता आ रहा है और आगे भी इसी विचारधारा से करता रहेगा। इसी कड़ी में एक और स्वर्णिम एवं ऐतिहासिक अध्याय जुड़ गया जब 28 मार्च, 2023 को माननीय महामहिम राष्ट्रपति महोदया श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी ने ऑनलाइन माध्यम से अखिल भारतीय स्तर पर देश भर में 50 नई शाखाओं का उद्घाटन किया। यह समस्त यूकोजन के लिए एक अविस्मरणीय क्षण की तरह है।

यूको बैंक के इतिहास के पन्नों में अगर हम झाँके तो यह मूल विचार महात्मा गांधी द्वारा 1942 में छेड़े गए ऐतिहासिक "भारत छोड़ो आंदोलन" के बाद भारत के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री घनश्याम दास जी बिड़ला के मन में पल्लवित हुआ। उस समय की जो स्थिति थी, उनका यह मानना था कि कोई भारतीय बैंक ही भारतीय उद्योगपतियों को बेहतर बैंकिंग सेवा प्रदान कर सकता है। अपने इसी विचारधारा के साथ उन्होंने कुछ और लोगों को अपने साथ जोड़ा और 6 जनवरी, 1943 को एक इतिहास रचा गया और इस प्रकार "दि यूनाइटेड कमर्शियल बैंक लिमिटेड" का जन्म हुआ एवं श्री घनश्याम दास जी बिड़ला इसके प्रथम अध्यक्ष बने। बैंक को अपने जन्म के प्रारम्भिक चरणों में कई परेशानियों का सामना करना पड़ा । परंतु आम जनता ने बैंक की स्थापना का तहे दिल से स्वागत किया । एक अग्रणी वित्तीय पत्रिका **'दि इंडियन फिनांस'** ने बैंक की स्थापना की घोषणा करने हेतु अपना एक विशिष्ट परिशिष्ठ निकाला।

बैंक ने रु. 2 करोड़ की अभिदत्त पूंजी तथा रु. 1 करोड़ की प्रदत्त पूंजी के साथ कोलकाता में अपने प्रधान कार्यालय के साथ अपनी बैंकिंग यात्रा की शुरुआत की । 10 मई, 1943 से 2, रॉयल एक्स्चेंज प्लेस, कोलकाता में स्थित कार्यालय से बैंक ने अपना औपचारिक परिचालन कार्य आरंभ किया । यह बैंक की पहली शाखा थी । आज बैंक ने 3000 से अधिक शाखाओं, 2000 से अधिक एटीएम का नेटवर्क पूरा कर लिया है । इसके अतिरिक्त दो विदेशी शाखाएँ हाँगकाँग और सिंगापुर भी हैं तथा ईरान में एक प्रशासनिक कार्यालय भी है।

श्री बी. टी. ठाकुर बैंक के प्रथम महाप्रबंधक बने और उनके योग्य दिग्दर्शन में बैंक फूला-फला और इस प्रकार वे बैंक के प्रथम कर्मचारी भी हुए । बैंक की पहली वार्षिक रिपोर्ट 31.03.1944 को तैयार की गई थी।

अपनी आरंभिक सफलताओं से उत्साहित होकर बैंक ने अपना कारबार और फैलाने का निश्चय किया और 1946 में इसकी अभिदत्त पूंजी को 2 करोड़ रु. से बढ़ाकर 4 करोड़ रु. किया गया जिसके फलस्वरूप प्रदत्त पूंजी 1 करोड़ रुपये से बढ़कर 2 करोड़ रुपये हो गई।

जब 30 जनवरी, 1948 को महात्मा गांधी की क्रूर हत्या की गई थी तब पूरा देश सदमे में था और कश्मीर में अफवाहों का बाजार गरम हो गया था। कश्मीर के मोर्चे पर युद्धविराम की घोषणा होने तक कुछ समय के लिए देश की अर्थव्यवस्था चरमराई अवश्य थी परंतु इससे बैंक के कारोबार पर कुछ अधिक प्रभाव नहीं पड़ा। इस दौरान बैंक ने अपने विदेशी मुद्रा कारोबार में संवर्धन हेतु विदेशों में अपनी शाखा का विस्तार किया। 1951 में सिंगापुर शाखा, 1952 में हाँगकाँग शाखा तथा 1953 में लंदन में एक शाखा खोली गई।

समय अपनी गति से चलता रहा और बैंक नित्य अपने शिखर की ओर अग्रसर हो रहा था। नित दिन बैंक अपनी शाखा का विस्तार करता जा रहा था ताकि देश के प्रत्येक कोने में इसकी पहुँच हो सके और यह बैंक देश को अपनी सेवा प्रदान कर सके। इसी प्रकार बैंक ने 1960 में अपनी 100 वीं शाखा तमिलनाडु के पुरुसवाक्कम में खोली। सफलता की ओर गतिमान बैंक ने बहुत जल्द ही 100 करोड़ की जमाराशि की उपलब्धि भी हासिल की जो आज के प्रसंग में भले ही प्रासंगिक न हो परंतु उन दिनों बैंक यह कारनामा करने वाले बड़े बैंकों की सूची में शुमार हो गया और इसकी गिनती देश के अग्रणी बैंकों में होने लगी। वर्ष 1964 में बैंक ने 200 शाखाओं का आँकड़ा भी पार कर लिया और 31.12.1964 को बैंक की कुल 202 शाखाएँ हो चुकी थी ।

करीब 21 साल के बाद 10 ब्रेबॉर्न रोड, कोलकाता में बैंक को प्रधान कार्यालय का एक नया भवन प्राप्त हुआ जो उत्कृष्ट भित्ति मीनाकारी से सुसज्जित था। 29 अगस्त 1964 को बैंक के नए मुख्यालय के उद्घाटन के अवसर पर प्रकाशित एक स्मारिका को दिए गए संदेश में बैंक के अध्यक्ष श्री घनश्यामदास जी बिड़ला ने अपने ये मार्मिक उद्गार व्यक्त किए थे **"बैंकिंग मात्र साहूकारी कारबार नहीं है। तात्विक विश्लेषण करें तो यह स्वेच्छया समाज सेवा है। बैंक को सामाजिक कल्याण वाली संस्था के रूप में परिवर्तित करने हेतु यह विश्वास और साहस की अपेक्षा करती है। उसमें सुरक्षा और चौकसी अवश्य होनी चहिए परंतु समाज और देश की अर्थव्यवस्था की सेवा करने हेतु उसमें संकल्पना और दूरदृष्टि भी होनी चाहिए। केवल इसी से बैंक के नाम की सार्थकता सिद्ध होगी।"**

एक अग्रणी बैंक के रूप में त्वरित प्रगति की ओर अग्रसर बैंक ने 6 जनवरी, 1968 को अपनी स्थापना के शानदार 25 वर्ष पूरे किए और इस अप्रतिम उपलब्धि की खुशी बांटने के लिए 16 जनवरी, 1968 को कलकत्ता में रजत जयंती समारोह का आयोजन बड़ी धूम-धाम से किया गया। समारोह की अध्यक्षता इसके संस्थापक अध्यक्ष श्री घनश्यामदास जी बिड़ला ने की जबकि पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री श्री पी.सी. घोष मुख्य अतिथि के रूप में समारोह में उपस्थित हुए। इस अवसर पर प्रधान कार्यालय के भवन को आकर्षक ढंग से रोशनी से सजाया गया और बैंक की संवृद्धि और प्रगति में योगदान के लिए वरिष्ठ कर्मचारियों को सम्मानित भी किया गया।

इस विशेष अवसर पर नई दिल्ली में भी रजत जयंती समारोह का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता भारत के उप राष्ट्रपति श्री वी.वी. गिरि ने की, जो बाद में भारत के चौथे राष्ट्रपति बने। मुंबई में आयोजित समारोह में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री वी.पी. नाईक जी उपस्थित हुए। चेन्नै में भी रजत जयंती समारोह का आयोजन किया गया जिसमें राज्य के राज्यपाल सरदार उज्जल सिंह जी उपस्थित हुए।

बैंक के क्रियाकलापों की आश्चर्यजनक संवृद्धि और शाखाओं एवं कर्मचारियों की संख्या में तदनुरूपी बढ़ोतरी के फलस्वरूप कर्मचारियों के बीच संप्रेषण के एक माध्यम की आवश्यकता महसूस की गई। एक ऐसी आवाज जो संगठन के प्रति उनकी संवेदना को प्रकट करे और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उनकी बुद्धिमत्ता के प्रकटन की वाहिका बने जिससे कर्मचारियों का मनोबल बढ़े।

इस तरह बैंक की गृह पत्रिका यूको टॉवर अस्तित्व में आई और अप्रैल, 1965 में उसका प्रथम अंक प्रकाशित किया गया। इसके प्रारूप, प्रकाशन की आवधिकता, डिजाइन और ले आउट में हुए परिवर्तनों के बावजूद बैंक की लब्ध प्रतिष्ठ विरासत और रंगारंग अस्तित्व के दर्पण के रूप में इसका निरंतर प्रकाशन होता रहा है।

वर्ष 1969 देश के बैंकिंग इतिहास का युगांतकारी वर्ष रहा। 50 करोड़ रु. से अधिक की जमाराशि वाले अन्य बड़े अनुसूचित वाणिज्य बैंकों के संग 19 जुलाई, 1969 को दि यूनाइटेड कमर्शियल बैंक का भी राष्ट्रीयकरण किया गया। राष्ट्रीयकरण की कार्रवाई ने न केवल भारतीय बैंकिंग के ढांचे को बदल डाला बल्कि इसने देश की सामाजिक आर्थिक धारा को भी मोड़ दिया। अंततः बैंक की एक नई पहचान बनी और यह "यूनाइटेड कमर्शियल बैंक" के नाम से प्रचलित हुआ ।

बैंकों को राष्ट्रीयकृत करने के पीछे भारत सरकार का एकमात्र उद्देश्य था, बैंकिंग सेवा को जन-जन तक पहुंचाना और सरकार का यह कदम बैंकिंग इतिहास में एतिहासिक कदम सिद्ध हुआ। सरकार के इस एक फैसले ने करोड़ों भारतीयों तक बैंक को पहुंचा दिया। कभी मेट्रो और शहरी क्षेत्रों तक सीमित रहने वाले सरकारी बैंक गाँव-कस्बे तक पहुँचने लगे । सरकारी योजनाओं को लागू करने में ये मददगार सिद्ध हुआ जिसका सीधा लाभ हितग्राहियों तक पहुँचने लगा। राष्ट्रीयकरण के परिणामस्वरूप इसके बाद की अवधि में राष्ट्रीयकरण के दर्शन के तहत उसे सौंपे गए सामाजिक उद्देश्यों को पूरा करने हेतु बैंक ने कृषि और लघु उद्योग के क्षेत्रों में उत्पादनकारी कार्यकलापों को अधिकाधिक वित्तपोषण कर लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करने का प्रयास किया। ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास में तेजी लाने और खुदरा व्यापारियों, व्यावसायिकों, स्वनियोजित लोगों और छोटे कारबारियों को सहायता पहुंचाने की दृष्टि से बैंक ने विशेष योजनाएं बनाई। दिसंबर, 1969 में सरकार द्वारा अग्रणी बैंक योजना की घोषणा के फलस्वरूप बैंक को 7 राज्यों के 23 जिलों में "अग्रणी बैंक" बनाया गया। बैंक ने इस उत्तरदायित्व को सहर्ष स्वीकार किया।

अपनी शाखा विस्तार के क्रम में 23 नवंबर, 1971 को सोनापुर, असम में 500 वीं शाखा खोली गई । पूर्वोत्तर क्षेत्र के आर्थिक विकास में बैंक के अवदान की स्वीकृति स्वरूप इसका उद्घाटन असम के भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री महेंद्र चौधरी ने किया । बैंक की शाखा एवं व्यवसायिक विस्तार का क्रम यूं ही अनवरत चलता रहा और बैंक नित दिन प्रगति की ओर एक-एक कर के नए कीर्तिमान स्थापित करता गया ।

केंद्रीय वित्त मंत्री द्वारा जुलाई, 1975 में की गई घोषणा के अनुसार बैंक को पहले पांच क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों में से एक बैंक को प्रायोजित करने का सम्मान मिला जिसका उद्घाटन 2 अक्तूबर, 1975 को किया गया। 2 दिसंबर, 1977 को कलकत्ता के यतीन्द्र मोहन एवेन्यू में इसने अपनी 1000 वीं शाखा खोली जिसके रंगारंग उद्घाटन समारोह में पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री श्री ज्योति बसु और वित्त मंत्री श्री अशोक मित्र, जो राष्ट्रीयकरण के तुरंत पश्चात बैंक के एक निदेशक भी रहे, उपस्थित थे । इसी वर्ष बैंक ने पहली 'अनुदेश पुस्तिका' का प्रकाशन किया जिसने बैंकिंग कार्यकलाप के सभी क्षेत्रों में कार्यालयीन क्रियाविधियों को सरल और कारगर बनाया । वर्ष 1978 भी बैंक के वृद्धि-पथ का महत्वपूर्ण वर्ष साबित हुआ क्योंकि इसकी जमाराशि ने 1000 करोड़ रु. का आंकड़ा पार किया और 24.24 प्रतिशत की वृद्धि दर्शायी।

वर्ष 1980 बैंक के लिए अविस्मरणीय रहा क्योंकि इस वर्ष बैंक ने 148 शाखाएँ खोलकर एक नया और अद्भुत कीर्तिमान बनाया जिसके करण भारत में इसकी शाखाएं बढ़कर 1267 हो गई थीं। जन-सामान्य तक पहुंचने और बैंक/जनसंख्या अनुपात में सुधार लाने की केंद्र सरकार की नीति को ध्यान में रखते हुए बैंक ने 1983 के पूरे वर्ष में अपने शाखा विस्तार कार्यक्रम को जारी रखा और इसकी शाखाओं की संख्या बढ़कर 1516 तक पहुंच गई।

बैंक की 1500 वीं शाखा रजियावास, अजमेर में खोली गई। इसकी कुल जमाराशि में 224.78 करोड़ रु. की बढ़ोतरी हुई और 1983 के अंत तक इसने 2700.99 करोड़ रु. के आंकड़े को छू लिया। इसी वर्ष अर्थात 1983 में ही भारतीय रिजर्व बैंक ने राज्य स्तरीय बैंकर समिति (एसएलबीसी) के संयोजकत्व का पुनर्निर्धारण किया और इस प्रकार ओडिसा (तब उड़ीसा) एवं हिमाचल प्रदेश की राज्य स्तरीय बैंकर समिति के संयोजकत्व का दायित्व यूनाइटेड कमर्शियल बैंक को सौंपा गया।

वर्ष 1985 में बैंक के साथ एक नया अध्याय जुड़ा। संसद द्वारा बैंक का नाम बदल कर यूको बैंक कर दिया गया। जिस बैंक का जन्म 1943 में दि यूनाइटेड कमर्शियल बैंक लि. के नाम से हुआ और जो 1969 से अर्थात राष्ट्रीयकरण के पश्चात यूनाइटेड कमर्शियल बैंक कहलाया, उसने 30 दिसंबर, 1985 से एक छोटा और स्निग्ध नाम यूको बैंक अपनाया। इस आदिवर्णक शब्द की पृष्ठभमि बड़ी दिलचस्प है। इस बात का पता चला कि इसी नाम का ही एक दूसरा बैंक बंगलादेश में है जो अंतरराष्ट्रीय बैंकिंग क्षेत्र में समस्या पैदा कर रहा है। इसी कारण से बैंक के नाम में बदलाव किया गया ।

बैंक अपनी गति से निरंतर सफलता की ओर अग्रसर हो रहा था । परंतु ऐसा कहा जाता है कि परिस्थिति हर समय एक जैसी नहीं होती। अंधकार के बाद उजाला आता है तो उजाले के बाद अंधकार भी आता है। ठंड के बाद गर्मी आती है तो गर्मी के बाद ठंड भी आती है; फिर बीच में बरसात का मौसम भी आता है। यही प्रकृति का नियम है जो निरंतर चलता रहता है। यूको बैंक भी कुछ ऐसी ही परिस्थिति के आगे विवश हो गया जब 1989 के दौरान बैंक के कार्यनिष्पादन ने एक मिश्रित तस्वीर पेश की। जहां कारोबार की संवृद्धि सहित कई क्षेत्रों में बैंक का कार्यनिष्पादन उद्योग के स्तर के आसपास था, वहीं इसके कार्यकारी परिणामों में अपकर्ष के स्पष्ट लक्षण दिखने लगे थे और बैंक के इतिहास में पहली बार 54.59 करोड़ रु. की शुद्ध हानि दर्ज की गई । बैंक जहां एक ओर अपने जन्म से निरंतर संवृद्धि की ओर अग्रसर था, अचानक से गिरावट आई और हानि जैसे नकारात्मक शब्द तुलन-पत्र में पहले पन्ने पर आसीन हो गए । करीब एक दशक तक बैंक लगातार हानि की मार झेल रहा था। इसके पुनरुत्थान के लिए सरकार एवं बैंक प्रबंधन द्वारा लगातार प्रयास जारी थे, जिसके परिणामस्वरूप दस साल के बाद वर्ष 2000 में बैंक ने टर्न-अराउंड किया और कई पंडितों द्वारा डूबती नैया के रूप में खारिज किए जाने के बाद बैंक कामयाब साबित हुआ और इसके तुलन-पत्र में पुनः लाभ दिखाई पड़ा जो पिछले दस वर्षों से अदृश्य हो गया था। 31 मार्च 2000 को समाप्त वर्ष में बैंक न 36.64 करोड़ रु. का शुद्ध लाभ अर्जित किया जबकि परिचालन लाभ 38.38 करोड़ रु. से बढ़कर 176.84 करोड़ रु. हो गया ।

वर्ष 1997 में शुरू की गई अनुकूल पुनरुत्थान योजना वर्ष 2000 में समाप्त हो गई। निर्धारित मानदंडों को ध्यान में रखते हुए अपने कायाकल्प के निमित्त विभिन्न उपायों को लागू करने में बैंक सफल रहा और इसने 1998-99 में परिचालन लाभ तथा अनुकूल पुनरुत्थान योजना के अंतिम वर्ष में परिचालन और शुद्ध लाभ, दोनों, अर्जित किया। आंतरिक लेखा कार्य और व्यवस्था तथा ग्राहक सेवा में चौतरफा सुधार हुआ। अनुकूल पुनरुत्थान योजना में निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप बैंक कंप्यूटरीकरण के पथ पर अग्रसर हुआ।

इस दौरान बैंक ने अपने कर्मचारियों को उत्साहित करने के लिए अपना मिशन वक्तव्य भी सामने रखा। यह मिशन बैंक द्वारा स्वयं अपनी खोज करने और वित्तीय जगत में अब तक सुस्थापित हो चुके प्रबल प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण में संघर्षरत होने हेतु स्टाफ सदस्यों को चुनौतीपूर्ण और अर्थपूर्ण दिशा निर्धारित करने के निमित्त बैंक की अभिव्यक्ति थी। यह मिशन था- "कर्मचारियों की कार्यकुशलता बढ़ाकर उनकी प्रभावी सहभागिता से एवं नवीनतम प्रौद्योगिकी के प्रयोग द्वारा कारबार तथा

लाभप्रदता में सतत वृद्धि करते हुए एवं सर्वोत्तम ग्राहक सेवा प्रदान कर सामाजिक-आर्थिक दायित्वों को पूरा करने हेतु सर्वोत्कृष्ट श्रेणी का बैंक कहलाना "।

बैंक अपने दायित्व का ईमानदारी से निर्वहन करते हुए आगे बढ़ रहा था और जैसा कि हमारे बैंक का टैगलाइन है "सम्मान आपके विश्वास का" को सार्थक करते हुए निरंतर अपने ग्राहकों के विश्वास को जीतता आ रहा था । सब कुछ ठीक चल रहा था कि वर्ष 2015-16 में फिर से बैंक पर संकट के बादल छाए और कायाकल्प के लगभग 15 साल बाद पुनः बैंक ने शुद्ध हानि दर्ज किया और भारतीय रिजर्व बैंक ने प्रतिबंध लगते हुए यूको बैंक को पीसीए के तहत कर दिया ।

> यह मिशन था- "कर्मचारियों की कार्यकुशलता बढ़ाकर उनकी प्रभावी सहभागिता से एवं नवीनतम प्रौद्योगिकी के प्रयोग द्वारा कारबार तथा लाभप्रदता में सतत वृद्धि करते हुए एवं सर्वोत्तम ग्राहक सेवा प्रदान कर सामाजिक-आर्थिक दायित्वों को पूरा करने हेतु सर्वोत्कृष्ट श्रेणी का बैंक कहलाना "।

यूको बैंक के इतिहास में यह दुसरा ऐसा क्षण था जब बैंक खतरे में आया था। परंतु इस बार यूकोजन के पास एक हिम्मत थी, धैर्य था और इस संकट से उबरने का जज्बा था, क्योंकि इसके पहले हमने ऐसा कारनामा कर दिखाया था। इसी जज्बे के साथ आगे बढ़ते हुए बैंक ने फिर से पुनरुत्थान योजना बनाई और उस पर त्वरित कार्रवाई करते हुए बैंक प्रबंधन ने कुछ आवश्यक दिशानिर्देश भी जारी किए । इस बार टर्न-अराउंड करने में बैंक को पिछली बार की तरह 10 वर्ष का इंतजार नहीं करना पड़ा और करीब 4 वर्षों के बाद बैंक ने मार्च 2020 को समाप्त तिमाही में शुद्ध लाभ दर्ज किया।

यह सभी यूकोजन के लिए एक बहुत बड़ी उपलब्धि थी और इसका श्रेय तत्कालीन प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री अतुल कुमार गोयल ने सभी यूकोजन को दिया । उन्होंने कहा कि यह आप सबके कठोर परिश्रम का ही फल है कि आज यूको बैंक फिर से टर्न-अराउंड करने में सफल रहा । इस प्रकार अगली तिमाही के परिणाम के पश्चात भारतीय रिजर्व बैंक ने भी यूको बैंक पर लगाए गए प्रतिबंध (पीसीए) को वापस ले लिया ।

इस दौरान सम्पूर्ण देश कोरोना की मार झेल रहा था परंतु यूकोजन ने जिस उत्साह और लगन के साथ काम किया उससे कोरोना का भी हमारे बैंक व्यवसाय पर कोई अधिक असर नहीं पड़ा और तब से लेकर अब तक बैंक निरंतर सफलता के पथ पर गतिमान है और तिमाही-दर-तिमाही लाभ का आँकड़ा बढ़ता ही जा रहा है। आज भी देश के एक प्रभावी बैंक के रूप में हमारा बैंक सुख्यात है। यूको बैंक ने एक लंबी याला तय की है और अपनी समस्त आंतरिक क्षमताओं के कारण यह ग्राहकों का मित्र बैंक तथा निपुण बैंकर का प्रतीक बन गया है । वस्तुत: यूको बैंक आपके विश्वास का सम्मान करता है ।

यूको बैंक के आठ दशक

आमुख लेख

सुभाष चंद्र साह
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय, भागलपुर

हम सभी का यह सौभाग्य कि हम आजादी के अमृत महोत्सव के अमृत काल का साक्षी बन रहे हैं। स्वतंत्रता संग्राम के आदर्शों एवं मूल्यों से अनुप्राणित होकर कई संगठनों एवं संस्थाओं का उदय हुआ, जिन्होंने देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। बैंकिंग एवं आर्थिक जगत की ऐसी ही एक संस्था का नाम है – यूको बैंक। 1942 के ऐतिहासिक भारत छोड़ो आंदोलन के बाद राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के अनन्य सहयोगी एवं औद्योगिक पुनर्जागरण के पुरोधा श्री घनश्याम दास बिड़ला ने मूल रूप से भारतीय बैंक स्थापित करने की अपनी परिकल्पना को मूर्त रूप देते हुए 6 जनवरी,1943 को दि यूनाइटेड कमर्शियल बैंक लिमिटेड की स्थापना की ।

बैंक का औपचारिक परिचालन 10 मई, 1943 को 2, रॉयल एक्सचेंज प्लेस,कोलकाता में आरंभ हुआ। यह बैंक की प्रथम शाखा थी। शीघ्र ही बैंक की 14 शाखाएं खुल गईं । बैंक की 100वीं शाखा 1957 में पुरुसवाक्कम, चेन्नई में खुली। 10 ब्रबोर्न रोड ,कोलकाता में बैंक का प्रधान कार्यालय 1964 ई. में अस्तित्व में आया। 1968 ई. में बैंक स्थापना की रजत जयंती मनाई गई ।

बैंक के इतिहास में 19 जुलाई,1969 का दिन स्वर्णिम है, जब 13 अन्य बैंकों के साथ इसका राष्ट्रीयकरण किया गया एवं बैंक का नाम यूनाईटेड कमर्शियल बैंक हो गया । राष्ट्रीयकरण के समय बैंक की 372 शाखाएं थीं । इस ऐतिहासिक घटना के फलस्वरूप अन्य राष्ट्रीयकृत बैंकों की तरह यूको बैंक की सोच और क्रियाकलापों में आमूल-चूल परिवर्तन हुआ। बैंक ने अब तक चली आ रही वर्ग बैंकिंग के स्थान पर सरकार की सार्वजनिक बैंकिंग की सामाजिक–राजनैतिक अवधारणा को अपनाया एवं सामाजिक सरोकार एवं जन कल्याण के प्रति अधिक उन्मुख हुआ। राष्ट्रीयकरण के पश्चात् बैंक शाखाओं के विस्तार में और अधिक गति आई । बैंक की 500वीं शाखा 1971 में सोनापुर,असम में तथा 1000 वीं शाखा 1975 ई. में जतीन्द्र मोहन एवेन्यू , कोलकाता में खुली ।

विकास की पृष्ठभूमि में व्यावसायिक प्रगति के लिए सन् 1972 में बैंक का सांगठनिक पुनर्गठन हुआ। इसके फलस्वरूप कार्य-विशेषज्ञता, प्रशासनिक विकेंद्रीकरण, कार्मिक निपुणता और अभिवृत्ति विकसित हुई।

30 दिसंबर,1985 में बैंक के इतिहास में एक नया अध्याय तब जुड़ा, जब संसद के अधिनियम के तहत इसका नाम परिवर्तित कर यूको बैंक रखा गया। 1985 ई. में ही बैंक का व्यवसाय 5000 करोड़ रु. हो गया ।

प्रगति के पथ पर अग्रसर बैंक को वर्ष 1989 ई. में पहली बार ₹ 54.89 करोड़ के शुद्ध घाटा का सामना करना पड़ा । इसके बाद लगातार कुछ वर्षों तक बैंक की वित्तीय स्थिति में धार नहीं रही ।

बैंक का कायाकल्प करने के लिए त्रिवर्षीय कार्यनीतिक पुनरुद्धार योजना (स्ट्रैटेजिक रिवाइवल प्लान) वर्ष 1997-2000 अंगीकार की गई । स्टाफ सदस्यों में उमंग एवं उत्साह का संचार करने के लिए 'हम इसे बनाएंगे' ('We shall make it') का नारा दिया गया।

इस योजना में अल्प लागत वाली जमा राशि के प्रचुर संग्रहण, एनपीए में त्वरित कमी तथा लेखा पालन में सुधार आदि पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया। प्रत्येक स्टाफ सदस्य के अनवरत परिश्रम एवं समर्पण भाव से इस योजना का उत्साहजनक परिणाम सामने आया एवं बैंक को वर्ष 1997-98 में ही 15.04 करोड़ का परिचालन लाभ प्राप्त हुआ ।

बैंक के लिए वर्ष 2000 काफी ऐतिहासिक रहा। बैंक चुनौतियों से बाहर आया एवं काफी वर्षों बाद 31 मार्च, 2000 को बैंक ने 36.64 करोड़ रु. का शुद्ध लाभ एवं 176.84 करोड़ का परिचालन लाभ दर्ज किया ।

बैंक फिर से प्रगति से पथ पर चल पड़ा । 1997-2000 की कार्यनीतिक पुनरुद्धार योजना से प्रेरणा लेते हुए संधारणीय वृद्धि एवं चुनौतियों का सामना करते हुए सर्वोत्कृष्ट श्रेणी का बैंक बनने हेतु बैंक ने 2001-2003 तक मध्यावधि पुनर्गठन योजना (Mid Term Restructuring Plan) को अंगीकार किया। 31 मार्च, 2001 को समाप्त वर्ष में बैंक का वैश्विक व्यवसाय रु. 30,000 करोड़ को पार कर गया। इसी वर्ष बैंक ने अपना मिशन वाक्य अपनाया । बैंक का मिशन वाक्य निम्नलिखित है - **कर्मचारियों की कार्यकुशलता बढ़ाकर उनकी प्रभावी सहभागिता से एवं नवीनतम प्रौद्योगिकी के प्रयोग द्वारा कारोबार तथा लाभप्रदता में सतत वृद्धि करते हुए एवं सर्वोत्तम ग्राहक सेवा प्रदान कर सामाजिक-आर्थिक दायित्वों को पूरा करने हेतु सर्वोत्कृष्ट श्रेणी का बैंक कहलाना ।**

2006-07 में बैंक का व्यवसाय रु.1 लाख करोड़ को पार करता हुआ रु.1,12,231 करोड़ हो गया । लेकिन लगभग 10 वर्षों के बाद 2016-17 में समग्र आर्थिक परिवेश एवं एनपीए के बोझ के चलते एक बार फिर से भारतीय बैंकिंग तंत्र पर संकट के बादल मंडराने लगे। गंभीर आर्थिक परिवेश की काली छाया ने यूको बैंक को भी प्रभावित किया । संशोधित एनपीए व प्रावधानीकरण मानदंडों एवं अन्य अपेक्षाओं को पूरा नहीं करने के कारण विनियामक भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा बैंक को 2017 में पीसीए फ्रेमवर्क के अंतर्गत प्रतिबंधित कर दिया।

किसी ने ठीक ही कहा है –**पराजय तब नहीं होती है ,जब हम गिर जाते हैं, बल्कि पराजय तब होती है, जब हम गिर कर उठने से इंकार कर देते हैं ।**

यूको परिवार असफलताओं के आगे घुटने टेकने वाला नहीं है। यूको परिवार ने एकबार फिर साबित किया कि उसमें हर चुनौतियों एवं संघर्षों से उबरने की अंतर्निहित क्षमता विद्यमान है। शीर्ष प्रबंधन के कुशल नेतृत्व तथा स्टाफ सदस्यों की अनवरत साधना से बैंक का पुन: कायाकल्प हुआ तथा 08 सितंबर ,2021 को भारतीय रिजर्व बैंक ने बैंक के प्रदर्शन को ध्यान में रखते हुए पीसीए फ्रेमवर्क प्रतिबंधों को हटाने का निर्णय लिया ।

उद्योग एवं वित्तीय जगत की कई महान हस्तियों ने यूको बैंक को नेतृत्व प्रदान कर इसे एक नई राह दिखाई है । बैंक के करोड़ों ग्राहक इसकी विकास यात्रा के संबल रहे हैं । यह भी गौरव की बात है कि बैंक के प्राथमिक ग्राहकों में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी भी शामिल रहे हैं ।

ग्राहकों की सेवा एवं सरकार की योजनाओं को मूर्त रूप देने के लिए प्रतिबद्ध यूको बैंक की अखिल भारतीय स्तर पर उपस्थिति है। 31 मार्च, 2023 की स्थिति के अनुसार बैंक अपनी 3205 घरेलू शाखाओं, सिंगापुर एवं हांगकांग में 2 शाखाओं एवं तेहरान, ईरान में 1 प्रतिनिधि कार्यालय, 2422 एटीएम एवं 5442 ग्राहक सेवा केंद्र के माध्यम से जनता की सेवा में समर्पित है। इसमें 600 मेट्रो,624 शहरी, 862अर्ध शहरी एवं 1119 ग्रामीण शाखाएं हैं । भारत की आत्मा गांवों में बसती है। राष्ट्र की सेवा में समर्पित यूको बैंक का ध्यान भी बैंकिंग सेवा विहीन क्षेत्रों

में शाखाओं के विस्तार पर अधिक केंद्रित रहा है। यही कारण है कि 3205 शाखाओं के विस्तृत नेटवर्क में 1119 ग्रामीण (34.81 %) शाखाएं हैं ।

यूँ तो यूको बैंक की अखिल भारतीय उपस्थिति है, किंतु भारत के पूर्वी एवं पूर्वोत्तर क्षेत्रों में इसकी अधिक मजबूत स्थिति है। यह विभिन्न सामाजिक एवं सामुदायिक विकास कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से शामिल रहा है। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य इन क्षेत्रों के लोगों के जीवन स्तर में सुधार करना एवं आर्थिक विकास को बढ़ावा देना है ।

बैंक व्यवसाय के क्षेत्र में नई उँचाइयों को छू रहा है। 30.06.2023 की स्थिति के अनुसार बैंक का कुल व्यवसाय रु. 4,13,972 करोड़ हो गया, जिसमें रु. 2,49,694 करोड़ जमाराशि एवं रु. 1,64,278 करोड़ ऋण शामिल हैं ।

संगठन की दृष्टि से इस समय बैंक में त्रिस्तरीय व्यवस्था है – (i) शाखा स्तर (ii) अंचल कार्यालय स्तर एवं (iii) प्रधान कार्यालय स्तर । बैंक का प्रधान कार्यालय कोलकाता में है एवं इस समय पूरे भारत में 43 अंचल कार्यालय कार्यरत हैं। अंचल कार्यालय प्रधान कार्यालय एवं शाखा के मध्य कड़ी का कार्य करते हैं ।

हमारे बैंक के संयोजकत्व में वर्ष 1983 में ओडिशा एवं हिमाचल प्रदेश में राज्य-स्तरीय बैंकर्स समिति की स्थापना हुई । बैंक देश के 36 जिलों में अग्रणी बैंक के दायित्व का भी निर्वाह कर रहा है। इसके साथ ही बैंक ने 7 राज्यों असम, बिहार, हिमाचल प्रदेश, ओडिशा, पंजाब, राजस्थान एवं पश्चिम बंगाल में 27 ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान स्थापित किए हैं। ये प्रशिक्षण संस्थान बुनियादी संरचना के साथ ग्रामीण युवाओं को प्रशिक्षित करने एवं उसके कौशल को उन्नयन प्रदान करने हेतु एवं उनकी बेरोजगारी की समस्या को दुर / कम कर उसके हौसले को उड़ान देने के प्रति समर्पित है।

बैंक लगभग 21000 स्टाफ सदस्यों के माध्यम से जनता के कल्याण को सर्वोपरि प्राथमिकता देते हुए राष्ट्र की सेवा में समर्पित है ।

बैंक का लोगो इसकी पहचान है। समय – समय पर लोगो का स्वरूप एवं रंग भी बदलते रहे हैं । मयूरी नीले रंग के साथ लोगो का वर्तमान स्वरूप सितंबर1991 से जारी है। नया रंग पवित्रता एवं अनंत काल का प्रतीक है,जो बैंक की अखंडता एवं निरंतरता का द्योतक है ।

बैंक ने विजन वाक्य को भी अंगीकार किया है । बैंक का विजन है -एक ऐसी विश्वस्तरीय वित्तीय संस्था के रूप में सामने आना जो अत्यंत विश्वस्त और प्रशंसनीय हो तथा जिसे प्रत्येक ग्राहक व निवेशक बहुत पसंद करते हों एवं जिस पर उसके कर्मचारियों को गर्व हो ।

बैंक का आदर्श वाक्य (टैग लाइन) है – 'सम्मान आपके विश्वास का।

ग्राहकों के प्रति सम्मान एवं प्रतिबद्धता का भाव बैंक के मिशन एवं विजन में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है । ग्राहकों के प्रति अपना समर्पण भाव प्रदर्शित करते हुए बैंक ने वर्ष 2009 को ग्राहक वर्ष के रूप में मनाया । किसी भी उत्कृष्ट संस्थान के लिए गृह पत्रिका का होना महत्वपूर्ण है। यह संगठन का दर्पण होता है तथा प्रबंधन व कार्मिकों के बीच संवाद का उत्कृष्ट माध्यम होता है। बैंक की गृह पत्रिका 'यूको टॉवर' का प्रकाशन 1965 ई. में आरंभ हुआ एवं यह अभी भी जारी है ।

यूको बैंक राष्ट्र के बैंकिंग क्षेत्र का अग्रणी बैंक है। बैंक ने विगत आठ दशकों में कृषि उद्योग,व्यापार,आधारभूत संरचना एवं सामाजिक कल्याण जैसे विभिन्न क्षेत्रों में वित्तीय सेवाएं प्रदान कर देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया है। बैंक ने सरकार के विजन को साकार करने तथा कई महत्वपूर्ण योजनाओं को सफल करने में उल्लेखनीय भूमिका निभाई है ।

यूको बैंक के आठ दशकों की यात्रा रोमांचक एवं उतार चढ़ाव से भरपूर रही है। बैंक तमाम संकटों एवं चुनौतियों का सामना करते हुए स्टाफ सदस्यों के समर्पण,ग्राहकों एवं हितधारकों के अटूट विश्वास के फलस्वरूप और अधिक निखर कर सामने आया है ।

आठ दशकों की गौरवशाली यात्रा के दौरान बैंक ने अनेक उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं । बैंक के कार्यों को कई वित्तीय संस्थाओं एवं सरकार के द्वारा सराहा गया है। बैंक को विभिन्न स्तरों पर असाधारण उपलब्धियों के लिए लगातार सम्मानित किया जाता रहा है।

हाल में भी बैंक को कई पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हुए हैं। यह हर्ष की बात है कि इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा बैंक को वित्तीय वर्ष 2020-21 के लिए डिजिटल भुगतान लेनदेन में द्वितीय सर्वाधिक प्रतिशत के लिए उत्कर्ष पुरस्कार एवं सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के अंतर्गत भीम – यूपीआई लेन – देन में सर्वाधिक प्रतिशत के साथ लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रतिष्ठा पुरस्कार प्रदान किया गया है ।

सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम होने के फलस्वरूप बैंक भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के प्रति प्रतिबद्ध रहा है एवं कई उल्लेखनीय उपलब्धियों से गौरवान्वित हुआ है। हाल में ही राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय , भारत सरकार द्वारा राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए बैंक को वर्ष 2020-21 एवं 2021-22 का सर्वोच्च राजभाषा कीर्ति पुरस्कार – प्रथम प्रदान किया गया है ।

बैंक के 8 दशकों के गौरवपूर्ण इतिहास में 28 मार्च,2023 का दिन अत्यंत गौरवपूर्ण है। इस दिन बैंक के 80 वर्ष पूरा होने के उपलक्ष्य में आयोजित विशेष समारोह में भारत की माननीया राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी ने मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होकर समस्त यूको परिवार को गौरवान्वित किया एवं अपने प्रेरक उद्बोधन से ऊर्जा का संचार किया। इस दिन माननीया राष्ट्रपति जी के कर कमलों से बैंक की 50 शाखाओं का उद्घाटन भी संपन्न हुआ ।

यूको बैंक ने बैंकिंग क्षेत्र की चुनौतियों व प्रतिस्पर्धात्मक परिवेश में अपनी स्थिति को जीवंत रखा है तथा परिस्थितियों के अनुसार अपने को ढाला है। बैंक ने अपनी कार्यदक्षता,ग्राहक सेवा एवं लाभप्रदत्ता में वृद्धि करने के लिए तकनीक एवं नवाचार को अपनाया है । यूको बैंक के पास एक ऐतिहासिक विरासत एवं गौरवपूर्ण साख है। राष्ट्र के प्रति अपने समर्पण एवं जनता की सेवा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को कायम रखते हुए बैंक आने वाले समय में भी बैंकिंग प्रणाली की आकांक्षाओं के अनुरूप बदलाव एवं नवाचार को अपनाते हुए भी सेवा एवं सामाजिक सरकार के मूलभूत सिद्धांतों के प्रति निष्ठावान रहेगा ।

यूको बैंक के आठ दशकों की यात्रा के सहभागी रहे करोड़ों ग्राहकों, निवेशकों एवं हितधारकों का आभार एवं अभिनंदन, जिन्होंने हर परिस्थिति में न केवल विश्वास को बनाए रखा बेल्कि संबल भी प्रदान किया। बैंक-प्रबंधन, सभी स्टाफ सदस्यों एवं यूको जनों को नमन , जिन्होंने बैंक को अपने खून व पसीने से सींचा है ।

आइए ! हम सभी बैंक के प्रति अपनी साधना की लौ को और अधिक तेज करें ताकि राष्ट्र एवं जनता की समृद्धि में समर्पित बैंक की यात्रा अविराम गति से जारी रहे ।

जब दर्द, क्रोध या दुःख होता है, तो यह अपने भीतर देखने का समय है, अपने आसपास नहीं।

जग्गी वासुदेव

यूको बैंक की विकास यात्रा

आमुख लेख

प्रतीक रमोला
शाखा बाजपुर
अंचल कार्यालय, देहरादुन

कलकता से उदित रवि, आज सम्पूर्ण धरा पर छाया है।
नीलपीत के मधुर योग से, भारतवर्ष को चमकाया है॥

1942 में जब भारत छोड़ो आन्दोलन पूरे भारतवर्ष में जोर शोर से हो रहा था तभी देश के एक प्रख्यात उद्योगपति घनश्याम दास बिरला जी ने एक भारतीय बैंक की कल्पना की, जो पूर्णतः भारतीय जन मानस के लिए समर्पित हो और उस कल्पना की आधारशिला 6 जनवरी 1943 को यथार्थ में दि यूनाइटेड कमर्शियल बैंक के रूप में देश की तत्कालीन औद्योगिक राजधानी कोलकाता में रखी गई।

बैंक का मुख्य उद्देश्य उस समय आर्थिक दरिद्रता में लिप्त भारत में वाणिज्यिक कारोबार को बढ़ावा देकर देश में आर्थिक गतिविधियों को बढ़ाना था। घनश्याम दास जी का प्रभाव एवं यूको बैंक की आभा ही थी कि बैंक के प्रारंभिक ग्राहकों में राष्ट्रपिता गांधीजी भी शामिल हुए। विश्वयुद्ध के बाद जब भारतीय अर्थव्यवस्था, औपनिवेशिकता के दवाब में चरमरा गई थी, उस दौरान बैंक ने सर्वप्रथम रंगून में और तत्पश्चात क्रमशः सिंगापुर, होंगकॉन्ग, लंदन आदि में अपनी शाखाएं खोलकर, अपने उज्ज्वल एवं निरंतर प्रभावशील उन्नति की पटकथा लिखना शुरु कर दिया था।

1969 में राष्ट्रीयकरण के बाद से बैंक ने कई सरकारी योजनाओं के लाभ को आम जन मानस तक पहुंचाने का काम किया है साथ ही साथ बैंक ने कई सामाजिक जनचेतना फैलाने वाले कार्यक्रमों में भी भाग लिया जिस कड़ी में स्वच्छ भारत अभियान जैसे कार्यक्रम शामिल है। 1985 में संसद के अधिनियम से यूनाइटेड कमर्शियल बैंक का नाम बदलकर यूको बैंक कर दिया गया और हमें आज का इतना प्रचलित नाम मिला।

2003 में जब बैंक का पहला IPO आया तो साढ़े सत्रह गुना की उछाल के साथ यह बैंक आम लोगों के विश्वास का साक्षी बन गया। बैंक ने बदलती उन्नत तकनीकी को अपनाकर गाँव से शहर तक, मोबाइल बैंकिंग, एटीएम कार्ड और सुगम बैंकिंग को पहुँचाने का प्रयास किया। जिसका परिणाम यह है कि आज बैंक की 3000 से भी ज्यादा शाखाएं पूरे देश में फैली हैं जिसमें से लगभग 1400 शाखाएं ग्रामीण क्षेत्र में स्थित हैं। बैंक ने 2022 में ईरान के साथ रुपया भुगतान व्यवस्था और रूस के साथ वोस्ट्रो खाते खोलकर राष्ट्रीय ही नहीं बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी भूमिका का लोहा मनवाया है।

कोलकाता से शुरु हुई 80 वर्ष की इस यात्रा में बैंक कर्मचारियों का ही परिश्रम है कि बैंक आज देश के कोने-कोने तथा विदेश में भी अपनी सेवाएं दे रहा है। लगभग 22000 कर्मचारियों का श्रमबल ही रहा है कि 2 करोड़ से आज बैंक का व्यापार लगभग 4.13 लाख करोड़ हो गया है। किंतु इस स्वर्णिम यात्रा को जब व्यापक दृष्टि एवं समतुल्य बैंकों से तुलना करके देखा जाए तो यह यात्रा उत्थान से हसिए की ओर इशारा करती है।

ग्राहकों के हितों को सर्वोपरि रखकर, उनकी संतुष्टि को अपनी सफलता एवं उनकी सुगमता को अपनी साधना समझ कर बैंक ने जो 80 वर्ष का गौरवशाली ऐतिहासिक सफर तय किया है और आगे भी इसी तरह नई ऊर्जाशक्ति से अग्रसर रहेगा तथा देश के आर्थिक योगदान में इसी तरह संबल बनेगा।

"नमन है इस यात्रा को, जिसमें दिखता तप, परिश्रम है
लगा क्रेता का धन तो छिपा सदस्यों का सत्कर्म है।"

यूको बैंक के प्रतीक चिह्न की यात्रा के आठ दशक

नील कमल
वरिष्ठ प्रबन्धक
अंचल कार्यालय , बेगूसराय

आमुख लेख

यूको बैंक की स्थापना 06 जनवरी 1943 को हुई थी । इसका तत्कालीन नाम "दि युनाइटेड कमर्शियल बैंक लिमिटेड" था और श्री घनश्यामदास बिड़ला इसके पहले चेयरमैन थे ।

वर्ष 1943 में बैंक का प्रतीक चिह्न (लोगो) वर्तमान के प्रतीक चिह्न से सर्वथा भिन्न था। बैंक का पहला प्रतीक चिह्न गोलाकार था, जिसमें बाहरी घेरे और भीतरी घेरे को अलग करने वाली वृत्ताकार परिधि में बैंक का नाम - "द युनाइटेड कमर्शियल बैंक लिमिटेड" अंकित था। आंतरिक घेरे में भारतीय प्रायद्वीप (अविभाजित) का दक्षिणी, पश्चिमी और पूर्वी हिस्सा समुद्र से घिरा हुआ दिखाया गया था, जो बैंक की विशालता और असीमित दायरे का प्रतीक था । इस भूमि क्षेत्र के भीतर, हाथ में सिक्के रखे हुए एक छवि अंकित थी, जो धन की देवी लक्ष्मी के हाथों का प्रतीक थी । साथ ही एक मोटर पंप की छवि भी थी, जो कृषि के विकास का प्रतीक था। भारतीय प्रायद्वीप के पानी वाले हिस्से में दोनों तरफ नाव और जहाज की छवि अंकित थी, जो बैंक के विदेशी व्यापार का प्रतीक थे । इस प्रतीक चिह्न के पार्श्व का रंग पीला था ।

सन 1958 में बैंक ने एक नया प्रतीक चिह्न (लोगो) अपनाया । यद्यपि बैंक का प्रतीक चिह्न अभी भी गोलाकार ही था और इस बार भी बाहरी घेरे और भीतरी घेरे को अलग करने वाली वृत्ताकार परिधि में बैंक का नाम - "दि युनाइटेड कमर्शियल बैंक लिमिटेड" अंकित था परंतु गोले के शीर्ष पर एक मगर को दर्शाया गया था जिसे धन के पौराणिक देवता कुबेर के ध्वज से लिया गया था । इस मगर को यहाँ धन और बैंकिंग के प्रतीक के रूप में दिखाया गया था। बैंक के नाम वाले वलय के भीतर ऊपरी भाग में सारनाथ के अशोक स्तंभ से शेर, पहिया और हाथी की संयुक्त छवि को उकेड़ा गया था, यह बैंक के भारतीय मूल के होने को दर्शाता था । इसके ठीक नीचे समुद्री जलरेखाओं पर तैरते एक जहाज की छवि अंकित थी, यह बैंक के प्रधान कार्यालय को कलकत्ता में होने तथा प्रतीक रूप में वाणिज्य और उद्योग को दर्शाते थे । इस प्रतीक चिह्न के पार्श्व का रंग सफेद था तथा जल वाले हिस्से में नीले रंग का प्रयोग हुआ था । इस वक्त श्री घनश्यामदास बिड़ला ही बैंक के चेयरमैन थे ।

सन 1973 में, बैंक ने एक नया प्रतीक चिह्न अपनाया। नया प्रतीक चिह्न गोलाकार की बजाय अष्टकोणीय आकार में था और इसका रंग था - नारंगी । नारंगी एक पूरक रंग है - दो प्राथमिक रंग- लाल और पीले का मिश्रण। लाल रंग गतिशीलता का प्रतीक है, पीला भविष्य और जीवंतता का प्रतीक है। इस अष्टकोण के भीतर अँग्रेजी वर्णमाला का अक्षर "यू – (U)" था – जो बैंक का ग्राहकों के प्रति प्रतिबद्धता का द्योतक था । साथ ही अक्षर "यू" के ऊपर की ओर निर्देशित दो हाथ सतत प्रगति का प्रतीक थे । इस वक्त श्री वी आर देसाई बैंक के चेयरमैन थे । दस वर्षों के पश्चात , वर्ष 1983 में बैंक ने अपने प्रतीक चिह्न में पुन: बदलाव का निर्णय लिया ।अब नए प्रतीक चिह्न में एक अष्टकोण रखा गया जिसमें जुड़े दो हाथ ऊपर की ओर उठे हुए थे जिनके मध्य एक सिक्का रखा गया । हथेलियों की आकृति इस तरह रखी गई कि वे बीच के सिक्के की सुरक्षा कर रहे हों ।

यह प्रतीक चिह्न ग्राहकों की जमा पूंजी की सुरक्षा का प्रतीक है । ऊपर उठे हुए हाथ बैंक की प्रगति और उसकी आकांक्षाओं को दर्शाते हैं। प्रतीक का रंग नारंगी ही रहा , जो सहयोग एवं आपसी रिश्ते की उष्मता को दर्शाता है।

पुन: सितंबर 1991 से, इस मूल डिज़ाइन को अपरिवर्तित रखते हुए सिर्फ प्रतीक चिह्न के रंग को नारंगी से बदलकर भारत के राष्ट्रीय पक्षी मोर वाले नीले रंग का कर दिया गया। यह नया रंग पवित्रता और अनंत काल का प्रतीक है, जो बैंक की अखंडता और निरंतरता को दर्शाता है। तब से अब तक यही प्रतीक चिह्न बैंक की पहचान है ।

1943 1958

1973 1983

1991

> संसार की समस्त विभूति व्यर्थ है यदि उसे मिल-बांटने के लिए तुम्हारे पास कोई साथी नहीं हो तो।
> - घनश्यामदास बिड़ला

यूको बैंक : सम्मान आपके विश्वास का

अंकिता
प्रबंधक
आदमपुर शाखा , भागलपुर अंचल

बंधन अटूट विश्वास का
उम्मीद सबकी आस का ।

सबसे ज्यादा खास है
कितना प्यारा इसका साथ है ।

विश्वास जीतता ही नहीं निभाता भी है
अपनों सा महसूस कराता भी है ।

खुशियों की सौगात है
जीवन भर का साथ है ।

हौंसलों को देता ये उड़ान
सच्चाई है इसकी पहचान ।

हर क्षण अपना फर्ज निभाए
इसकी दोस्ती सबको भाए ।

सबके लिए अवसर यह लाता
सबका है ये साथ निभाता ।

देता दिल के दरवाजे खोल
बोले हमेशा स्नेह के बोल ।

ये है अपना यूको बैंक
मेहनत और सच्चाई है इसकी शान
करे सबके विश्वास का सम्मान ।

विंध्यावटी - यात्रा वृतांत

यात्रा वृत्तांत

आशिमा गुप्ता
वरिष्ठ प्रबंधक
वित्त विभाग, अंचल कार्यालय , नई दिल्ली

प्रायः हर प्राणी एक निश्चित दिनचर्या के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करता है, फिर चाहे वह नौकरीपेशा हो या गृहस्थ । परंतु एक बंधी-बंधाई दिनचर्या के अनुसार कार्य करते रहने पर कभी-कभी ऊब जाता है और अपने जीवन-चक्र में बदलाव चाहता है। हर प्रकार के परिवर्तन के लिए यात्रा का अत्यधिक महत्त्व है। यात्रा करना मानव की मूल प्रवृत्ति है। हम अगर मानव इतिहास पर नजर डालें तो पाएंगे कि मनुष्य के विकास की यात्रा में यात्रा का

महत्वपूर्ण योगदान है। अपने जीवन काल में मानव किसी न किसी यात्रा के लिए कहीं न कहीं अवश्य जाया करता है।

यात्रा अथवा नये स्थानों पर भ्रमण से व्यक्ति के जीवन में आई नीरसता समाप्त हो जाती है और वह अपने अन्दर एक नया उत्साह का अनुभव करता है। इतना ही नहीं, इन यात्राओं से व्यक्ति के अन्दर आत्मविश्वास और साहस उत्पन्न होता है। इससे विभिन्न व्यक्तियों के बीच आत्मीयता भी बढ़ती है और हमारे व्यावहारिक ज्ञान की वृद्धि होती है। ऐतिहासिक स्थलों की यात्रा मैं कई बार कर चुकी हूँ परन्तु छात्र जीवन में मुझे पर्वतीय स्थल की यात्रा करने का जो शुभ अवसर भी प्राप्त हुआ उसे मैं भूल नहीं पाई हूं।

मई का महीना था। हमारी परीक्षाएँ अप्रैल में ही समाप्त हो चुकी थीं। रविवार का दिन था। छात्रावास के सभी छात्रों ने विन्ध्य पर्वत पर जाने का निश्चय किया। छात्रावास के संरक्षक ने भी सहर्ष अनुमति दे दी और साथ में चलने के लिए तैयार हो गए। बस बुक कर ली गई । सभी आवश्यक सामग्री लेकर हम बस में बैठ गए और बस हमें साथ में

लेकर अभीष्ट स्थल की ओर बढ़ गई । पावस ऋतु थी । चारों ओर हरियाली छाई हुई थी । सारा आकाश कजरारे मेघों से ढका था। मौसम बड़ा ही सुहावना था तथा नन्हीं-नन्हीं फुहार पड़ रही थीं ।

टेढ़े-मेढ़े रास्तों को पार करती हुई हमारी बस विंध्यावटी पहुँच गई । वहाँ प्रकृति की मनोहारी छटा को देख कर मन मयूर नृत्य कर उठा । मंद-मंद शीतल पवन के झोंके हम लोगों को विशेष आनन्द प्रदान करने लगे । कुछ ही देर में बादल छँट गए ।

सूर्य देव ने दर्शन दिए और उसकी किरणें दुर-दुर फैली हुई पर्वतमाला पर पड़ने लगीं । बरसाती नाले और झरने अपनी कल-कल ध्वनि से एक अपूर्व संगीत पैदा कर रहे थे । शैल मालाएँ हरी चादर ओढ़े कौतूहल उत्पन्न कर रही थीं । दृश्य बड़ा ही मनोहारी था ।

सबसे पहले हमने वन-विहार किया । फिर हम लोग अष्टभुजा पर्वत पर पहुँचे । कई सौ सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद बने मंदिर में अष्टभुजा देवी के दर्शन किए । वहाँ पर एक सुंदर सरोवर देख कर कुछ आश्चर्य हुआ । एक स्थल पर जल पर्वत के नीचे से आकर एक कुण्ड में इकट्ठा हो रहा था। वह सीता कुण्ड कहलाता है। इसका जल शीतल और स्वास्थ्यवर्द्धक था। पर्वत शिखर से गंगा की ओर नज़र दौड़ाई तो रजत की क्षीण रेखा-सी दृष्टिगत होने लगी। दुर-दुर तक मैदान दिखलाई पड़ रहा था। उसमें पेड़-पौधे और गाँव दिखलाई पड़ रहे थे ।

हमने वहीं मन्दिर के पास दरी बिछा ली और सरोवर में स्नान कर सब साथियों ने मिलकर भोजन का आनन्द लूटा। हमारे कुछ साथी संगीत में विशेष रुचि रखते थे ।

थोड़े विश्राम के बाद संगीत का कार्यक्रम शुरू हुआ , कुछ ही क्षणों में सारा वातावरण संगीतमय हो गया । सूर्य देव अब पश्चिम की ओर प्रस्थान करने लगे थे । आकाश भी बादलों से घिरने लगा था । बारिश की आशंका को ध्यान में रखते हुए हमने फटाफट अपना सामान समेट कर बस में रखा और इस प्रकार जंगल में मंगल मनाकर हमारी बस हॉस्टल की ओर रवाना हुई । हम सब अत्यंत उत्साह से भरे हुए थे । प्रकृति की गोद में समय बिता कर हम सब में एक नई ऊर्जा का संचार हो गया। प्रकृति की गोद में बिताए हुए दिन की यादों का लुत्फ उठाते हुए रात्रि आठ बजे हम हॉस्टल लौटे। आज का दिन वास्तव में बड़ा ही आनन्दमय और उल्लासवर्द्धक रहा ।

मैं आज भी उस दिन की स्मृति को अपने हृदय में छिपाए हुए हूं। मेरे दिल में रह-रह कर उस यात्रा की मधुर स्मृतियां गोते खाती रहती हैं। हम सभी को समय-समय पर विविध स्थलों की यात्रा अवश्य करनी चाहिए; क्योंकि इससे जीवन में एक नई संकल्पना का संचार होता है और हम जीवन के प्रति नए उत्साह से भर जाते हैं ।

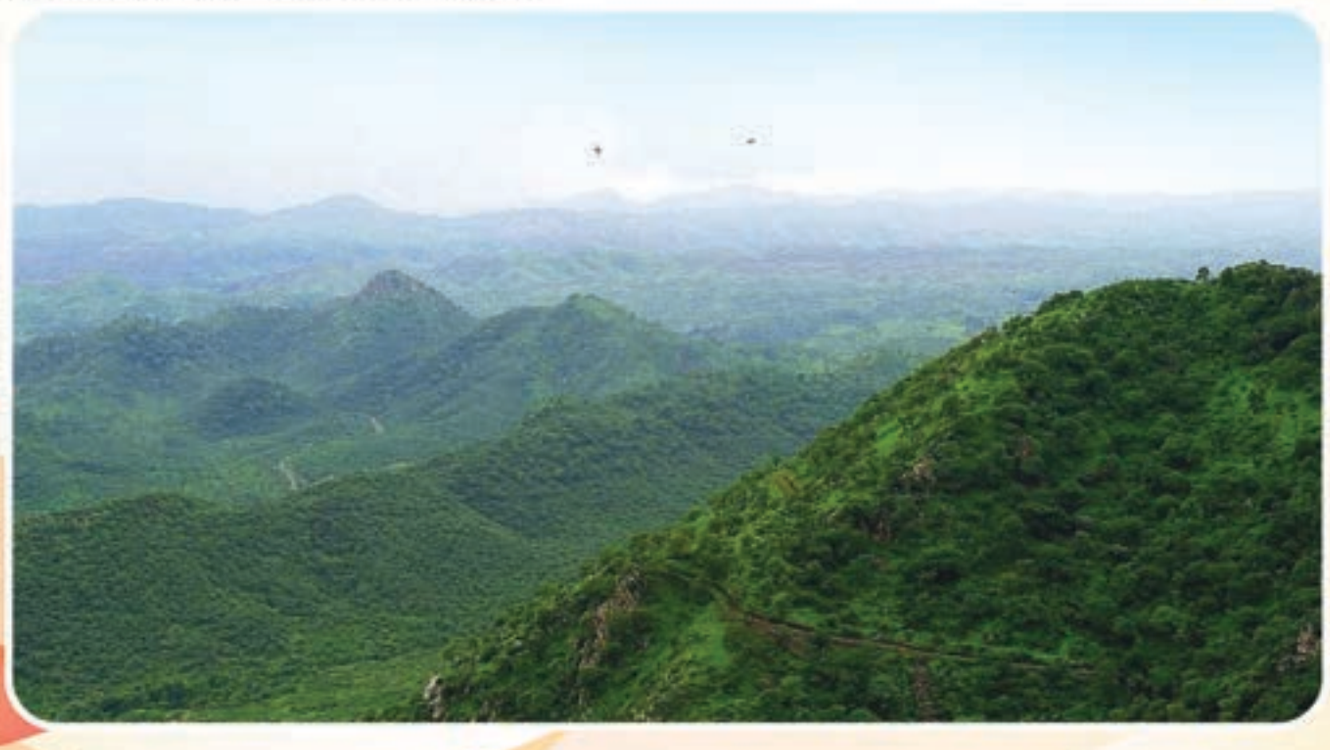

अर्थशास्त्री सी रंगराजन के संस्मरण:

"फोर्क्स इन द रोड: माई डेज़ ऐट आरबीआई एंड बियॉन्ड

पुस्तक समीक्षा

नब्बे वसंत देख चुके प्रख्यात अर्थशास्त्री चक्रवर्ती रंगराजन बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। अकादमिक जगत से आकर उन्होंने भारतीय रिजर्व बैंक के उप गवर्नर तथा गवर्नर का दायित्व निभाया। वे तत्कालीन योजना आयोग के सदस्य, बारहवें वित्त आयोग के अध्यक्ष, सांसद, प्रधान मंत्री के आर्थिक सलाहकार परिषद के अध्यक्ष तथा अल्प काल के लिए दो राज्यों के राज्यपाल रहे । पेंगुइन बिजनेस द्वारा प्रकाशित अंग्रेजी में लिखी उनकी संस्मरणात्मक पुस्तक "फोर्क्स इन द रोड: माई डेज़ एट आरबीआई एंड बियॉन्ड" चर्चा में है। पुस्तक तीन भागों में विभाजित है। भाग 1 को 'ऐट आरबीआई बिट्विन 1982 एण्ड 1991', भाग 2 को ' 'ऐट आरबीआई बिट्विन 1992 एण्ड 1997 ' और भाग 3 को 'बियोंड आरबीआई' कहा गया है। जैसा कि एक समाचार साप्ताहिक के लिए इस पुस्तक की समीक्षा में विरल वी आचार्य ने कहा है, 'डॉ. सी रंगराजन की किताब आधुनिक भारतीय वित्त व्यवस्था के प्रमुख वास्तुकार के रूप में उनके विराट सफर को विस्तार से सामने रखती है। यह भारत में तीन दशक (1982 से 2014) से अधिक की उनकी लोक सेवा का लेखा-जोखा है।' अर्थशास्त्रियों के महत्व तथा उनके योगदान को रेखांकित करती यह पुस्तक एक ही साथ विशेषज्ञों के शोध में सहायक तथा सामान्य पाठक के लिए ज्ञानवर्धक है।

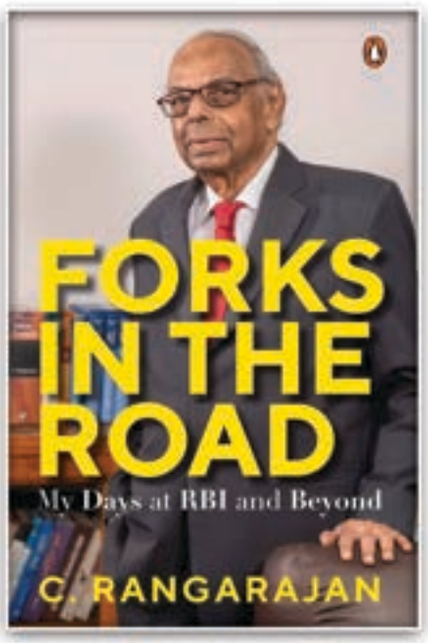

डा. सी रंगराजन को एक मौन तथा गंभीर पर्यवेक्षक समझा जाता है। यह पुस्तक उनके सूक्ष्म पर्यवेक्षण तथा वित्तीय समझदारीजन्य कौशल के बल पर एक सफल नीति निर्माता के रूप में उनके उभरने का इतिहास है। वर्ष 1982 में भारतीय रिजर्व बैंक से उनकी पेशेवर यात्रा शुरू हुई। लेखक ने 1982 और 2014 के बीच की प्रमुख घटनाओं का यहाँ जिक्र किया है।

यह पुस्तक भारत की अर्थव्यवस्था का संस्मरण ही नहीं है बल्कि यह जन सामान्य के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव डालनेवाली नीतियों के निर्माण तथा निर्णय लेने के पीछे निहित भावना का अभिलेख भी है। इसमें भारत की विकास गाथा का एक सरस तथा सप्रमाण विवरण भी है। इस पुस्तक में दिखलाया गया है कि कठिन आर्थिक समस्याओं से जूझते तत्कालीन भारत ने क्या किया और क्या नहीं किया, वह कहाँ सफल हुआ और कहाँ असफल रहा। यह पुस्तक चुनौतियों से जूझने तथा अवसरों का लाभ उठाने की दिशा में भारतीय रिजर्व बैंक के पेशेवर प्रयासों का कालक्रमबद्ध विवरण भी है। इस किताब से पता चलता है कि कैसे विगत शताब्दी का आठवाँ दशक भुगतान संकट के साथ ही शुरू हुआ तथा दशक के समापन तक यह संकट बना रहा। उस दशक ने भारतीय रिजर्व बैंक तथा भारत सरकार, वित्त मंत्रालय के बीच मुद्रास्फीति पर नियंत्रण तथा राजकोषीय घाटे को कम करने के मुद्दे पर रस्साकशी का दौर भी देखा। पुस्तक में लाइसेंस-परमिट युग के समापन, सार्वजनिक उद्यमों पर लोकस्वामित्व का क्रमश: क्षरण तथा घरेलू उद्योगों को संरक्षण प्रदान करके उन्हें आयात के विकल्प के रूप में खड़ा करने की पूर्ववर्ती नीति से किनाराकशी करने के संबंध में ससंदर्भ जानकारी है। विरल वी आचार्य लिखते हैं कि महंगाई पर लगाम

लगाने के प्रयासों में भारतीय रिजर्व बैंक तथा भारत सरकार ने वर्ष 2016 में जो व्यवस्था की वह रिजर्व बैंक में गवर्नर के नाते डा. सी रंगराजन के प्रयासों की तार्किक परिणति ही है। पुस्तक बताती है कि इस काल में राजनीतिक नेतृत्व ने ठोस तकनीकी सलाह को गुरुता देने के मामले में कोई संकोच नहीं किया।

इस समय भारतीय रिज़र्व बैंक के बीच किसी गंभीर मतभेद का कोई अवसर नहीं आया। यह दशा अर्थव्यवस्था के तत्कालीन संकटों को सुलझाने के लिए आदर्श सिद्ध हुई फलस्वरूप देश भुगतान संतुलन के क्षेत्र में क्रमश: आए संकट को झेल सका। पुस्तक का दुसरा भाग लेखक के महत्वपूर्ण व्याख्यानों से लिए उद्धरणों से भरा है। इस भाग में बैंक में कंप्यूटरीकरण के युग के आरंभ के संकेत मिलते हैं। आज ऑनलाइन भुगतान की प्रणाली का नियामक भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम (एनपीसीआई) है। पहले यह काम आईडीआरबीटी के जिम्मे था। डा. रंगराजन लिखते हैं कि वर्ष 2009 में मेरी अध्यक्षता में गठित एक समिति की सलाह पर यह कार्य एनपीसीआई को दिया गया। पुस्तक के इस भाग का समापन 'मेन (एण्ड विमेन) एण्ड मैटर्स, शीर्षक अध्याय से होता है। इसमें लोकवित्त तथा अर्थजगत की हस्तियों से हमारा परिचय होता है। पुस्तक के तीसरे अध्याय में लेखक ने बताया है कि किस प्रकार उन्होंने राज्यों के लिए धन जुटाने की दिशा में काम किया। इस अध्याय में उन्होंने राज्यपाल के रूप में अपने अनुभव भी लिखे हैं।

हम जानते हैं कि संस्मरण में लेखक का व्यक्तित्व मुखर हो ही जाता है। पर इस पुस्तक में ऐसा नहीं लगता। यह पुस्तक डा सी रंगराजन का एक संस्मरण तो है पर इससे अधिक यह उस काल के आर्थिक इतिहास का एक रोचक वृत्तान्त है। यदि बीच- बीच में आई नीरस सारणियों तथा लंबे संदर्भों को नजर अंदाज़ कर दें तो यह पुस्तक पाठकों की रुचि तथा जिज्ञासा को बढ़ाने तथा उसका शमन करने की सामग्री से भरपूर है। ⬢

समीक्षा : श्री सत्येन्द्र कुमार शर्मा , प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग में मुख्य प्रबंधक

पर्यावरण संरक्षण

विजय शर्मा
पुत्र श्री सत्येन्द्र कुमार शर्मा
मुख्य प्रबंधक, राजभाषा विभाग
प्रधान कार्यालय

हमने क्या कभी सोचा है,
प्रकृति के अवदानों को।
वर्षा, ऋतुएँ, प्राण-वायु
और अनगिनत वरदानों को॥

माँ की तरह प्यार लुटाती,
बदले में कुछ ना लेती है।
दिन में रोशनी, रात में चाँदनी
मुफ़्त में ढ़ेरों साधन देती है॥

कहीं पर हैं फूलों का बिस्तर,
तो कहीं पर बर्फ की चादर।
निर्भीक, साहसी प्रहरी जैसे
खड़े हैं पर्वत सीधा तनकर॥

पर क्या हमने इसका मोल है समझा,
मूल्यहीन किया इन वरदानों को।
जंगलों की निर्मम हत्या कर,
खड़ा कर दिया कंकरीट के मकानों को॥

नदियों को पाटा है हमने,
कूड़े-कचड़े और प्रदुषण से।
निज स्वार्थ में चूर होकर
भर दिया प्रकृति को जहरीले कण से॥

हम मानव ने इसकी सीमाएं तोड़ी,
दुष्परिणाम हमें भुगतना होगा।
आनेवाली हमारी पीढ़ी को
और भी भयावता से जूझना होगा॥

बहुत हो गया, अब ठान लें मन में,
पर्यावरण को बचाना हमारा ध्येय हो।
प्रकृति की एक मनोरम तस्वीर
भावी पीढ़ी को देना उद्देश्य हो॥

यदि मानव प्रकृति के अनुसार चले,
तो नहीं होगा पर्यावरण असंतुलन।
समूची धरती पर खुशहाली होगी,
महक उठेगा विश्व उपवन॥

मीनू और मिठाई

बाल वीथिका

रिद्धि श्रीवास्तव

धूप खिली थी। अलबेला मिष्टान्न भंडार अभी खुला ही था। भंडार के मालिक रामू काका बच्चों के लिए एक विशेष मिठाई बनाते थे। इसका नाम उन्होंने 'हलवा ओरियो पारफेट' रखा था। मुहल्ले में नई आई मीनू ने वह मिठाई मांगी। रामू काका ने उसे मिठाई दी, पैसे रख लिए।

मीनू को मिठाइयाँ बहुत पसंद आईं। वह हर दिन अलबेला मिष्टान्न भंडार आती और सारा हलवा ओरियो पारफेट ले जाती। एक दिन जब वह फिर वही मिठाई लेने आई तो रामू काका ने उसे समझाया कि वह उस मिठाई को ज्यादा न खाए, दुसरी विशेष मिठाई ले ले । मीनू ने कहा, 'मुझे तो वही पसंद है'। तब रामू काका ने समझाया कि तुम ही सारा हलवा खा जाती हो, दुसरे बच्चों को नहीं मिल पाता है और वे दुकान से निराश चले जाते हैं।

रामू काका ने कहा, " तुम थोडा लो। सारा हलवा खा जाना, तुम्हारे दांतों और स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है।" "नहीं, मुझे यही पसंद है और मैं यही खाऊंगी', कहकर मीनू चली गई।

रामू काका ने एक तरकीब सोची। उन्होंने मिठाई में चीनी की जगह थोड़ा नमक मिला दिया। अगले दिन वह हलवा खरीदने आई और जैसे ही उसने हलवा खाया, हलवा नमकीन पाया। उसने सोचा कि यह गलती से हुआ होगा। कुछ दिनों तक ऐसा ही होता रहा।

एक दिन मीनू ने रामू काका से पूछा कि पिछले कुछ दिनों से हलवा नमकीन क्यों हो गया है? रामू काका ने कहा कि क्योंकि तुम ही सारा हलवा खा जाती हो और दुसरे बच्चों को नहीं मिलता वे उदास वापस चले जाते हैं इसलिए इसमें थोड़ा नमक मिलाया गया है।

रामू काका ने मीनू से कहा, "ज्यादा चीनी और मिठाइयां खाना आपके दांतों और स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं हैं।" मीनू समझ गयी कि रामू काका उसे क्या सिखाना चाहते हैं। वह मुस्कुराई और बोली कि वह अब ऐसा नहीं करेगी। रामू काका भी मुस्कुराए।

डीपीएस, कोलकाता में कक्षा-V की छात्रा रिद्धि श्री अमित श्रीवास्तव, उप महाप्रबंधक, कार्यनीति आयोजना विभाग, प्रधान कार्यालय की पुत्री हैं।

भारतीय कृषि में सरकार की पहल, नीतियां और उपाय

बैंकिंग लेख

हंसराज ठाकुर
उप महाप्रबन्धक एवं अंचल प्रमुख
देहरादुन अंचल

आजकल भारत सरकार किसानों के कल्याण को अधिक प्राथमिकता दे रही है। इस संबंध में यह कृषि क्षेत्र को फिर से जीवंत करने और उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार करने के लिए कई किसान कल्याण योजनाओं को लागू कर रहा है। इसलिए सरकार ने सभी किसानों को लाभान्वित करने के लिए नई पहल, कार्यक्रम और योजनाएं शुरू की हैं।

राष्ट्रीय कृषि बाजार (eNAM):- राष्ट्रीय कृषि बाजार (ईएनएएम) एक अखिल भारतीय इलेक्ट्रॉनिक ट्रेडिंग पोर्टल है जो कृषि वस्तुओं के लिए एक एकीकृत राष्ट्रीय बाजार बनाने के लिए मौजूदा एपीएमसी मंडियों को नेटवर्क करता है।

लघु किसान कृषि व्यवसाय संघ (SFAC) भारत सरकार के कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय के तत्वावधान में eNAM को लागू करने वाली प्रमुख एजेंसी है।

दृष्टि - एकीकृत बाजारों में प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करके कृषि विपणन में एकरूपता को बढ़ावा देना, वास्तविक मांग और आपूर्ति के आधार पर वास्तविक समय मूल्य की खोज को बढ़ावा देने वाले खरीदारों और विक्रेताओं के बीच सूचना विषमता को दूर करना।

सतत कृषि के लिए राष्ट्रीय मिशन (एनएमएसए) राष्ट्रीय सतत कृषि मिशन (एनएमएसए) कृषि उत्पादकता बढ़ाने के लिए विशेष रूप से एकीकृत खेती, जल उपयोग दक्षता, मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन और संसाधन संरक्षण के तालमेल पर ध्यान केंद्रित करते हुए वर्षा सिंचित क्षेत्रों में तैयार किया गया है।

एनएमएसए के तहत योजनाएं: वर्षा सिंचित क्षेत्र विकास (आरएडी): आरएडी को आरएफएस प्रभाग द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है ।

मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन (एसएचएम): आईएनएम डिवीजन द्वारा एसएचएम लागू किया जा रहा है ।

कृषि वानिकी पर उप मिशन (SMAF): SMAF को NRM प्रभाग द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है ।

परम्परागत कृषि विकास योजना (पीकेवीवाई): पीकेवीवाई को आईएनएम डिवीजन द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है ।

भारतीय मृदा और भूमि उपयोग सर्वेक्षण (एसएलयूएसआई): आरएफएस प्रभाग द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है ।

राष्ट्रीय वर्षा सिंचित क्षेत्र प्राधिकरण (एनआरएए): आरएफएस प्रभाग द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है ।

पूर्वोत्तर क्षेत्र में मिशन ऑर्गेनिक वैल्यू चेन डेवलपमेंट (MOVCDNER): INM डिवीजन द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है राष्ट्रीय जैविक खेती केंद्र (एनसीओएफ): आईएनएम प्रभाग द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है केंद्रीय उर्वरक गुणवत्ता नियंत्रण और प्रशिक्षण संस्थान (सीएफक्यूसी और टीआई): आईएनएम प्रभाग द्वारा कार्यान्वित प्रधान मंत्री कृषि सिंचाई योजना (पीएमकेएसवाई)।

प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना

प्रधान मंत्री कृषि सिंचाई योजना (पीएमकेएसवाई) को सिंचाई 'हर खेत को पानी' के दायरे को बढ़ाने और स्रोतपर एंड-टू-एंड समाधान के साथ केंद्रित तरीके से 'हर खेत

को पानी के उपयोग की दक्षता में सुधार लाने की दृष्टि से तैयार किया गया है। निर्माण, वितरण, प्रबंधन, क्षेत्र अनुप्रयोग और विस्तार गतिविधियाँ।

उद्देश्य: क्षेत्र स्तर पर सिंचाई में निवेश का अभिसरण प्राप्त करना (जिला स्तर की तैयारी और, यदि आवश्यक हो, उप जिला स्तरीय जल उपयोग योजनाएँ)। खेत पर पानी की भौतिक पहुंच बढ़ाना और सुनिश्चित सिंचाई (हर खेत को पानी) के तहत खेती योग्य क्षेत्र का विस्तार करना। उपयुक्त प्रौद्योगिकियों और प्रथाओं के माध्यम से पानी का सर्वोत्तम उपयोग करने के लिए जल स्रोत का एकीकरण, वितरण और इसका कुशल उपयोग। अपव्यय को कम करने और अवधि और सीमा दोनों में उपलब्धता बढ़ाने के लिए कृषि जल उपयोग दक्षता में सुधार। सटीक - सिंचाई और अन्य जल बचत प्रौद्योगिकियों को अपनाने में वृद्धि (प्रति बूंद अधिक फसल)। जलभृतों के पुनर्भरण को बढ़ाना और स्थायी जल संरक्षण प्रथाओं को लागू करना।

परम्परागत कृषि विकास योजना (पीकेवीवाई)

परम्परागत कृषि विकास योजना (पीकेवीवाई), देश में जैविक खेती को बढ़ावा देने की एक पहल, एनडीए सरकार द्वारा 2015 में शुरू की गई थी। योजना के अनुसार, किसानों को समूह या समूह बनाने और देश के बड़े क्षेत्रों में जैविक खेती के तरीकों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा।

उद्देश्य: प्रमाणित जैविक खेती के माध्यम से वाणिज्यिक जैविक उत्पादन को बढ़ावा देना। उत्पाद कीटनाशक अवशेष मुक्त होंगे और उपभोक्ता के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में योगदान देंगे। यह किसानों की आय बढ़ाएगा और व्यापारियों के लिए संभावित बाजार तैयार करेगा। यह इनपुट उत्पादन के लिए प्राकृतिक संसाधन जुटाने के लिए किसानों को प्रेरित करेगा।

प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना (पीएमएफबीवाई)

प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना (पीएमएफबीवाई) सरकार द्वारा प्रायोजित फसल बीमा योजना है जो एक मंच पर कई हितधारकों को एकीकृत करती है। प्राकृतिक आपदाओं, कीटों और रोगों के परिणामस्वरूप किसी भी अधिसूचित फसल की विफलता की स्थिति में किसानों को बीमा कवरेज और वित्तीय सहायता प्रदान करना। खेती में निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए किसानों की आय को स्थिर करना। किसानों को नवीन और आधुनिक कृषि पद्धतियों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना। कृषि क्षेत्र को ऋण का प्रवाह सुनिश्चित करना। ग्रामीण भंडारण योजना, या ग्रामीण गोदाम योजना, ग्रामीण गोदामों का निर्माण या मरम्मत करने वाले व्यक्तियों या संगठनों को सब्सिडी प्रदान करने के लिए भारत सरकार की एक पहल है।

इस योजना का उद्देश्य: ग्रामीण क्षेत्रों में संबद्ध सुविधाओं के साथ वैज्ञानिक भंडारण क्षमता का सृजन करना। कृषि उपज, प्रसंस्कृत कृषि उपज और कृषि आदानों के भंडारण के लिए किसानों की आवश्यकताओं को पूरा करना। कृषि उत्पादों की विपणन क्षमता में सुधार के लिए ग्रेडिंग, मानकीकरण और गुणवत्ता नियंत्रण को बढ़ावा देना। देश में कृषि विपणन बुनियादी ढांचे को मजबूत करके गिरवी वित्तपोषण और विपणन ऋण की सुविधा प्रदान करके फसल के तुरंत बाद संकट बिक्री को रोकें। पशुधन बीमा योजना इस योजना का उद्देश्य किसानों और पशुपालकों को मृत्यु के कारण उनके पशुओं के किसी भी नुकसान के खिलाफ सुरक्षा तंत्र प्रदान करना और लोगों को पशुधन के बीमा के लाभ को प्रदर्शित करना और पशुधन में गुणात्मक सुधार प्राप्त करने के अंतिम लक्ष्य के साथ इसे लोकप्रिय बनाना है।

फ़ायदे: ग्रामीण बीमा पॉलिसी किसानों, सहकारी समितियों, डेयरी फार्म और इसी तरह के स्वामित्व वाले स्वदेशी मवेशियों को बीमा कवर प्रदान करने के लिए डिज़ाइन की गई है। मवेशियों की मृत्यु के मामले में निम्नलिखित के लिए सुरक्षा प्रदान की जाएगी: -प्राकृतिक दुर्घटनाएं (बाढ़, अकाल, भूकंप, आदि), अप्रत्याशित परिस्थितियां (आकस्मिक उत्पत्ति में), सर्जिकल ऑपरेशन आतंकवादी अधिनियम हड़ताल और दंगे नागरिक हंगामा जोखिम ।

सूक्ष्म सिंचाई कोष (MIF): सरकार ने कृषि उत्पादन और किसानों की आय को बढ़ावा देने के अपने उद्देश्य के तहत सूक्ष्म सिंचाई के तहत अधिक भूमि क्षेत्र लाने के लिए एक समर्पित 5,000 करोड़ रुपये के कोष को मंजूरी दी। फंड नाबार्ड के तहत स्थापित किया गया है, जो सूक्ष्म सिंचाई को बढ़ावा देने के लिए राज्यों को रियायती ब्याज दर पर यह राशि प्रदान करेगा, जिसमें वर्तमान में 70 मिलियन हेक्टेयर की क्षमता के मुकाबले केवल 10 मिलियन हेक्टेयर का कवरेज है।

मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना : 2015 में लॉन्च किया गया। यह योजना देश के सभी किसानों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड जारी करने में राज्य सरकारों की सहायता करने के लिए शुरू की गई है। मृदा स्वास्थ्य कार्ड किसानों को उनकी मिट्टी में पोषक तत्वों की स्थिति के साथ-साथ मिट्टी के स्वास्थ्य और उसकी उर्वरता में सुधार के लिए उपयोग किए जाने वाले पोषक तत्वों की उचित खुराक की सिफारिश के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं।

नीम लेपित यूरिया (एनसीयू): यह योजना यूरिया के उपयोग को विनियमित करने, फसल को नाइट्रोजन की उपलब्धता बढ़ाने और उर्वरक आवेदन की लागत को कम करने के लिए शुरू की गई है। एनसीयू उर्वरक की रिहाई को धीमा कर देता है और इसे प्रभावी तरीके से फसल को उपलब्ध कराता है। घरेलू स्तर पर निर्मित और आयातित यूरिया की पूरी माला अब नीम लेपित है। यह खेती की लागत को कम करता है और मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन में सुधार करता है।

बारानी क्षेत्र विकास कार्यक्रम (आरएडीपी)वर्षा सिंचित क्षेत्र विकास कार्यक्रम (आरएडीपी) को राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (आरकेवीवाई) के तहत एक उप-योजना के रूप में लागू किया गया था।

उद्देश्य: किसानों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए, विशेष रूप से छोटे और सीमांत किसानों को कृषि रिटर्न को अधिकतम करने के लिए गतिविधियों का एक पूरा पैकेज प्रदान करके उपयुक्त कृषि प्रणाली आधारित दृष्टिकोण अपनाकर वर्षा सिंचित क्षेत्रों की कृषि उत्पादकता में स्थायी तरीके से वृद्धि करना। विविध और मिश्रित कृषि प्रणाली के माध्यम से सूखे, बाढ़ या असमान वर्षा वितरण के कारण संभावित फसल विफलता के प्रतिकूल प्रभाव को कम करना। उन्नत कृषि प्रौद्योगिकियों और खेती प्रथाओं के माध्यम से निरंतर रोजगार के अवसर पैदा करके बारानी कृषि में विश्वास की बहाली वर्षा सिंचित क्षेत्रों में गरीबी को कम करने के लिए किसान की आय और आजीविका समर्थन में वृद्धि। बारानी क्षेत्रों के लिए राष्ट्रीय वाटरशेड विकास परियोजना (एनडब्ल्यूडीपीआरए) वर्ष 1990-91 में एकीकृत वाटरशेड प्रबंधन और टिकाऊ कृषि प्रणालियों की जुड़वां अवधारणाओं के आधार पर वर्षा सिंचित क्षेत्रों के लिए राष्ट्रीय वाटरशेड विकास परियोजना (एनडब्ल्यूडीपीआरए) शुरू की गई थी।

लक्ष्य: प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, विकास और सतत प्रबंधन। स्थायी तरीके से कृषि उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि। पेड़ों, झाड़ियों और घासों के उचित मिश्रण के माध्यम से इन क्षेत्रों को हरा-भरा करके अवक्रमित और नाजुक वर्षा सिंचित पारिस्थितिकी तंत्र में पारिस्थितिक संतुलन की बहाली। सिंचित और बारानी क्षेत्रों के बीच क्षेत्रीय असमानता में कमी और; भूमिहीनों सहित ग्रामीण समुदाय के लिए सतत रोजगार के अवसरों का सृजन। कृषि बिल किसान उपज व्यापार और वाणिज्य (संवर्धन और सुविधा) अधिनियम, 2020 किसानों की उपज के

व्यापार क्षेत्रों के दायरे को चुनिंदा क्षेत्रों से "उत्पादन, संग्रह, एकत्रीकरण के किसी भी स्थान" तक विस्तारित करता है। अनुसूचित किसानों की उपज के इलेक्ट्रॉनिक व्यापार और ई-कॉमर्स की अनुमति देता है। राज्य सरकारों को 'बाहरी व्यापार क्षेत्र' में आयोजित किसानों की उपज के व्यापार के लिए किसानों, व्यापारियों और इलेक्ट्रॉनिक ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म पर कोई बाजार शुल्क, उपकर या लेवी लगाने से रोकता है। मूल्य आश्वासन और कृषि सेवा अधिनियम, 2020 पर किसान (सशक्तिकरण और संरक्षण) समझौता किसानों को मूल्य निर्धारण के उल्लेख सहित खरीदारों के साथ पूर्व-व्यवस्थित अनुबंधों में प्रवेश करने के लिए एक कानूनी ढांचा प्रदान करता है। विवाद समाधान तंत्र को परिभाषित करता है।

आवश्यक वस्तु (संशोधन) अधिनियम, 2020

अनाज, दालें, आलू, प्याज, खाद्य तिलहन और तेल जैसे खाद्य पदार्थों को आवश्यक वस्तुओं की सूची से हटा देता है, बागवानी तकनीकों द्वारा उत्पादित कृषि वस्तुओं पर "असाधारण परिस्थितियों" को छोड़कर स्टॉकहोल्डिंग सीमा को हटा देता है। यह आवश्यक है कि कृषि उपज पर कोई स्टॉक सीमा तभी लागू की जाए जब कीमत में तेज वृद्धि हो। ●

सन 1941 - 42 की **'इंडियन इयरबुक एंड हू इस हू'** में घनश्याम दास (जीडी) बिड़ला का परिचय प्रकाशित हुआ था -मिल मालिक, व्यापारी और जमींदार। ज्यादातर भारतीयों या गहरे रूप से जुड़े लोगों के लिए एक पब्लिक फिगर के रूप में घनश्यामदास बिड़ला किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। उन्हें भव्य मंदिरों के निर्माता, लाखों का दान करने वाले समाजसेवी और गांधी जी को आवास मुहैया कराने वाले व्यक्ति, जिनके घर में महात्मा शहीद हुए, के रूप में शायद सबसे ज्यादा जाना जाता है। जहां ज्यादातर भारतीय अपने जीवन में कभी न कभी बिड़ला का नाम सुनते ही हैं और नाम अपने में ही व्यापक बना रहता है, वहीं इस नाम के पीछे के व्यक्तित्व जीडी बिड़ला कहीं ना कहीं धुंधले हो रहे हैं। कुछ हद तक इसका कारण समय का प्रवाह है, लेकिन ऐसा इसलिए भी हुआ की ऐतिहासिक विभूति के तौर पर जीडी बिड़ला बहुत ज्यादा जटिल थे और उनके चंद समकालीन ही वास्तव में उनकी शख्सियत को समझ सके।

- वाणी प्रकाशन से प्रकाशित पुस्तक ' युग पुरुष घनश्यामदास बिड़ला' की भूमिका से उद्धृत

एक मुलाकात

श्री हिमाद्रि दत्त प्रायः चार दशकों की सेवा के उपरांत फरवरी, 2013 में मानव संसाधन प्रबंधन विभाग से महाप्रबंधक के पद से सेवानिवृत्त हुए। इस अवधि में आपने बैंक तथा बैंक के बाहर विभिन्न दायित्वों का निर्वहन किया है। आप एक संवेदनशील हृदय तथा आत्मीय प्रकृति के धनी व्यक्ति हैं। आपको एक विदग्ध फ़ैकल्टी, आत्मविश्वास से भरे कार्यपालक, प्रेरक लीडर तथा सौम्य सहकर्मी के रूप में जाना जाता है।

यूको बैंक के स्वर्णिम आठ दशक पूर्ण होने के उपलक्ष्य में यूको अनुगूँज के इस अंक के लिए श्री सत्येन्द्र कुमार शर्मा, मुख्य प्रबंधक, राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय ने श्री हिमाद्रि दत्त से लंबी बातचीत की। प्रस्तुत है उस बातचीत के संपादित अंश। - संपादक

महोदय, यूको बैंक ने अपने उद्देश्यपूर्ण अस्तित्व के 80 वर्ष पूरे कर लिए हैं। क्या आप हमें बैंक के इतिहास के बारे में कुछ बता सकते हैं?

वे देश में राष्ट्रीय आंदोलन के चरम के दिन थे। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के रचनात्मक आंदोलनों में एक था स्वदेशी आंदोलन। इस आंदोलन ने देशी पूंजीनिवेश को प्रोत्साहित किया। गांधी के अनुयायी तथा प्रसिद्ध उद्योगपति घनश्यामदास बिड़ला ने भारतीय पूंजी तथा प्रबंधन को लेकर एक बैंक की स्थापना का स्वप्न चरितार्थ किया। दि यूनाइटेड कमर्शियल बैंक के नाम से हमारे बैंक का उद्घाटन 6 जनवरी, 1943 को 6 पुर्तगीज़ स्ट्रीट, कोलकाता में किया गया। इसके बाद वर्तमान 2, रायल एक्सचेंज प्लेस (अब जिसे इंडिया एक्सचेंज प्लेस के नाम से जाना जाता है) में बैंक का पंजीकृत कार्यालय स्थापित हुआ। बैंक के विद्यमान प्रधान भवन का शिलान्यास वर्ष 1964 में हुआ। बैंक के प्रथम निदेशक मंडल के अध्यक्ष घनश्यामदास बिड़ला ही थे। स्थापना के साथ ही बैंक ने अपनी पहचान बना ली।

केन्द्र सरकार द्वारा वर्ष 1967 में बैंकों पर सामाजिक नियंत्रण के प्रयास हुए। इसी कड़ी में सरकार ने 19 जुलाई, 1969 को उन 14 प्रमुख बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया, जिनमें लगभग 50 करोड़ रुपये की जमा राशि थी । ऐसे बैंकों में हमारा बैंक पाचवें स्थान पर था।

बैंकों पर सामाजिक नियंत्रण का मुख्य उद्देश्य था समाज के विभिन्न क्षेत्रों में ऋण का समुचित आवंटन, बैंक-निधि के दुरुपयोग पर अंकुश और सामाजिक-आर्थिक विकास को बढ़ावा देने और वित्तीय सहायता हेतु बैंकों का उपयोग करना। राष्ट्रीयकरण के बाद हमारा बैंक सामाजिक नियंत्रण के उद्देश्यों को प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर हुआ।

आपने बैंक में कब और कहाँ योगदान किया ?

4 दिसंबर, 1973 को मैंने लिपिक सह सहायक रोकड़िया के रूप में तत्कालीन यूनाइटेड कमर्शियल बैंक की बलाट शाखा में योगदान किया। शीघ्र ही परिवीक्षाधीन अधिकारी के पद के लिए आयोजित साक्षात्कार में मुझे शामिल होने का अवसर मिला। मैं सफल रहा तथा मैंने एस एल जैन तथा एस एल आहूजा जैसे सफल बैंकरों के साथ काम किया। अपने कैरियर पथ पर आगे बढ़ते हुए मैंने रीजिनल स्टाफ कालेज, कोलकाता में फैकेल्टी, हांगकांग में एक्सक्यूटिव, भारतीय बैंक संघ में प्रतिनियुक्त अधिकारी तथा निदेशक मंडल के सचिव के रूप में कार्य किया। अंतत: मैं मानव संसाधन प्रबंधन विभाग का महाप्रबंधक बना और वर्ष 2013 में सेवानिवृत्त हुआ।

उन दिनों बैंक का प्रदर्शन कैसा था और बैंक की प्रशासनिक व्यवस्था क्या थी?

जैसा कि मैंने पहले ही कहा है मैंने वर्ष 1973 के आखिरी माह में बैंक की सेवा में भर्ती हुआ। राष्ट्रीयकरण के चार साल बीत गए थे। शाखा विस्तार का कार्य आरम्भ हुआ

तथा बैंक में अधिकारियों की भर्ती का दौर शुरू हो चुका था। बैंक अपनी भूमिका के निर्वाह लिए तैयार हो रहा था। वर्ष 1971 में परिवीक्षाधीन अधिकारियों का एक बैच आया, मैं दूसरे बैच में सम्मिलित हुआ। जब मैंने कार्यभार ग्रहण किया था तब बैंक में प्रशासन के तीन स्तर थे। शाखा, शाखा के ऊपर अंचल कार्यालय तथा सबसे ऊपर प्रधान कार्यालय था। आगे चलकर इस व्यवस्था में एक स्तर और जुड़ा तथा

बैंक में शाखा उसके ऊपर मंडल कार्यालय, फिर अंचल कार्यालय और अंत में सर्वोपरि प्रधान कार्यालय। इस बीच बैंक ने प्रशासनिक स्तर पर अनेक प्रयोग किए। अंचल कार्यालयों को बंद कर दिया गया। इस बीच बैंक ने तीन महाप्रबंधक (परिचालन) के कार्यालय खोले तथा उनसे विभिन्न अंचल कार्यालयों को सम्बद्ध किया। कालांतर में इन्हें भी बंद कर दिया गया तथा दस सर्कल कार्यालय खोले गए। बैंक के विभिन्न अंचल कार्यालयों को इन सर्कल कार्यालयों से जोड़ दिया गया। बाद में इन कार्यालयों को भी बन्द कर दिया गया।

कृपया हमें देश की सामाजिक-आर्थिक आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए बैंक द्वारा उठाए गए कदमों के बारे में कुछ बताएं?

बैंकों पर सामाजिक नियंत्रण की नीति के तहत बैंकों को सामाजिक बैंकिंग का दायित्व दिया गया। गाडगिल अध्ययन समूह और बैंकर समिति (नरीमन समिति) दोनों की सिफारिशों के आधार पर भारतीय रिज़र्व बैंक ने 1969 के अंत में 'अग्रणी बैंक योजना' शुरू की। इसके तहत 1989 में सर्विस एरिया अप्रोच आया । बैंक को अनेक जिलों में अग्रणी बैंक के भूमिका मिली। बैंक ने भारत सरकार की गरीबी दुर करने तथा रोजगार प्रदान करने के लिए ग्रामीण एवं शहरी युवाओं को प्रशिक्षित करने के अनेकानेक योजनाओं में सक्रिय भागीदारी की।

वर्ष 1975 में यूको बैंक को देश के प्रथम पाँच क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों में से एक जयपुर नागौर ग्रामीण बैंक प्रायोजित करने तथा उसके माध्यम से सामाजिक-आर्थिक विकास को गति देने का दायित्व मिला।

देश के सामाजिक-आर्थिक विकास की अपेक्षाओं पर बैंक सदा खरा उतरा है। आनेवाले समय में जब केन्द्रीय सरकार ने वित्तीय समावेशन के लिए जनधन योजना शुरू की तो यूको बैंक ने उसमें न सिर्फ बढ़-चढ़ कर भाग लिया वरन इस उपलब्धि के लिए उसे प्रशंसा भी मिली।

जैसा कि हम जानते हैं, राष्ट्रीयकरण के समय हमारा बैंक सभी बैंकों में पाँचवे स्थान पर था। परिचालन के कुछ क्षेत्रों में, हमारा बैंक अन्य समकक्ष बैंकों से अग्रणी था। वे कौन से क्षेत्र थे और बैंक ने किस तरह से रास्ता दिखाया?

इस संबंध में मैं एक व्यक्तिगत अनुभव से बात शुरू करना चाहूँगा। वर्ष तो याद नहीं है, तत्कालीन बीटीसी अर्थात बैंकर्स ट्रेनिंग कालेज में फ़ौरेक्स पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम में मैं भी एक प्रतिभागी था। कार्यक्रम के दौरान श्रीमती श्यामला गोपीनाथ आई थीं। उन्होंने कहा कि मुझे प्रसन्नता है कि मैं फॉरेक्स के क्षेत्र में पायोनीर बैंक के अधिकारियों को संबोधित कर रही हूँ। इस बात से मुझे गर्व का अनुभव हुआ। यही नहीं वर्ष 1988 में हमारे बैंक ने अनिवासी भारतीयों के लिए ब्यूरो की स्थापना की । इस क्षेत्र में भी हमारा बैंक अग्रणी रहा। आज मुझे बैंक के उन उच्च कार्यपालकों यथा श्री आर बैंकटकृष्णन, श्री आर के पिचाई की याद आ रही है जिनके प्रयासों से हमारा बैंक इन क्षेत्रों में पथप्रदर्शक रहा। इसके अतिरिक्त मैन्युअल बैंकिंग के दौर में हमारा बैंक सामान्य प्रणाली एवं प्रक्रिया (जनरल सिस्टम एंड प्रोसिजियर) के क्षेत्र में भी एक अनुकरणीय नाम था।

महोदय, इस सब के बावजूद हमारे बैंक के कार्यनिष्पादन में उतार-चढ़ाव आते रहे। बैंक समय – समय पर कठिनाइयों के दौर से गुजरा है। आपकी राय में, बैंक की प्रगति की राह में प्रमुख बाधाएँ क्या थीं?

मेरी समझ से वर्ष 1989 यूको बैंक की विकास यात्रा में उतार-चढ़ाव का दौर शुरू हुआ। कास्ट ऑफ फंड तथा डीआईसीजीसी के भारी शुल्क ने भी हमारी लाभप्रदता पर बुरा प्रभाव डाला। दुर्भाग्य से, इसी बीच हमारा बैंक देश के एक प्रमुख प्रेस की कुदृष्टि में आया गया। फिर क्या था मीडिया में बैंक के विषय में नकारात्मक खबरें आने लगीं, जनता का विश्वास डगमगाया। पर यह समय सभी बैंकों के लिए बुरा ही था।

फिर तो सिर मुड़ाते ही ओले पड़े । वर्ष 1992 में नरसिंहन समिति की सिफ़ारिशों के अनुसार प्रूडेन्शियल नार्म तथा पूँजी पर्याप्तता की बात हुई। इन सबने हमारे तुलनपत्र को डांवाडोल कर दिया। वर्षों तक हम हानि पर हानि उठाते रहे।

संकट के समय हमारे शीर्ष प्रबंधन ने संकट से उबरने का संकल्प लिया और अंततः वे सफल हुए। आप इन घटनाक्रमों के साक्षी रहे हैं, क्या आप कुछ उल्लेखनीय घटनाक्रम को याद करेंगे?

जहां तक मुझे स्मरण है वर्ष 1990 से 1997 तक बैंक लगातार घाटे में रहा। इससे हमारी साख पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। 1907 के आरंभ में बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री दीपक रुद्र का कार्यकाल समाप्त हो चुका तथा श्री एम एम वैश्य, कार्यपालक निदेशक बैंक का काम देख रहे थे। बैंक के कमजोर होते जा रहे स्वास्थ्य को लेकर वित्त मंत्रालय गंभीर था। इस मुद्दे पर बात करने के लिए तत्कालीन वित्त मंत्री श्री पी चिदंबरम हमारे प्रधान कार्यालय आए। वित्त मंत्री के दौरे से आशा की एक किरण फूटी। कुछ महीनों में श्री शारदा सिंह बैंक के नए अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक बने। बैंक ने स्ट्रेटेजिक रिवाइवल प्लान बनाया तथा उसे साकार करने में श्री शारदा सिंह जी-जान से लग गए। यह एक अभूतपूर्व मिशन था। वर्ष 1997 में बैंक ने परिचालन लाभ कमाया। वर्ष 1999-2000 में बैंक ने शुद्ध लाभ कमाया। श्री शारदा सिंह के काम को उनके उत्तराधिकारी श्री वी पी शेट्टी ने आगे बढ़ाया।

आप बाहरी संस्थानों और विदेशी परिचालन से जुड़े रहे हैं। आपको हमारे बैंक की ताकत और कमजोरियां क्या लगीं?

जी हाँ, भारत में विभिन्न पदों पर काम करने के साथ-साथ मैं भारतीय बैंक संघ में प्रतिनियुक्ति पर रहा तथा बैंक के हाँगकांग परिचालन से भी संबद्ध था। इस दौरान मुझे अपने बैंक के कार्यनिष्पादन तथा कार्मिकों की कमियों एवं खूबियों को निकट से देखने का अवसर मिला। मैं समझता हूँ मानव संसाधन हमारे बैंक का सबसे बड़ा धन है। उनका कौशल विकास करके हम अपने बैंक की शक्ति बढ़ा सकते हैं।

वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने हमारे बैंक के कामकाज को प्रभावित किया। निजी बैंकों के उद्भव और परिणामी प्रतिस्पर्धा के साथ हमें खुद को तैयार करना पड़ा। बैंक की प्रतिक्रिया क्या थी?

वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने हमारे बैंक को ही नहीं, पूरी बैंकिंग व्यवस्था को प्रभावित किया। हमारे बैंक ने इसे एक अवसर के रूप में देखा। ईरान का कारोबार तथा हाल में प्राप्त रूस का कारोबार वैश्वीकरण का ही तो फल है। समय बीतने के साथ बैंक ने कई आईटी सक्षम उत्पाद पेश किए और जन-धन खाते खोलने और मुद्रा योजना के तहत ऋण स्वीकृति करने में हमारा बैंक सबसे आगे रहा। हमारे बैंक को कई पुरस्कार और प्रशंसाएँ मिलीं।

और अंत में, क्या आप अपने तथा अपने परिवार के विषय में कुछ बताएंगे।

असम में हमारा संयुक्त परिवार था। पर अब हम यहाँ, कोलकाता में हैं। मेरा परिवार बहुत ही छोटा है। मैं तथा मेरी पत्नी श्रीमती मधुमती कोलकाता में रहते हैं। हमारी एक विवाहित पुत्री श्रीमती प्रियम है जो अपने पति के साथ स्थायी रूप से आस्ट्रेलिया में रहती है। उन्हें प्रिशा नाम की एक पुत्री है।

ज्ञान को लगातार सुधारना, चुनौती देना और बढ़ाना होता है नहीं तो वह गायब हो जाता है।

पीटर ड्रकर

माँ

ओंकार नाथ ठाकुर
वरिष्ठ प्रबंधक
भाटी सर्कल शाखा, जोधपुर अंचल

"माँ" जितनी समझ अब भी नही है।
मेरे बचपन में जो सिखाया,
मेरे सर पर आँचल रख कर आज भी सुनाती है... मेरी माँ !!

जंगल में अकेले छोड़ जाती थी,
शेर जनवरो से डरती नहीं,
शेरनी सी दहाड़ रखती थी .. मेरी माँ !!

पेड़ पर झूले में लटका जाती थी,
किट कीड़ों से डरती नहीं,
अमृत सा दुध पिलाती थी .. मेरी माँ !!

जाड़े में जलती आग के पास छोड़ जाती थी,
अंगारो से डरती नहीं थी,
कड़कती बिजली सी आग रखती थी ..मेरी माँ !!

सुनसान में अकेले छोड़ जाती थी,
जंगल की डरावनी आवाज़ों से डरती नहीं,
जंगल में ख़ौफ़ सा रखती थी ...मेरी माँ !!

शावक हूँ बोल के चली जाती थी,
फिर मेरे डरने के डर से डरती नहीं थी,
हौसलों से जीना सिखाती थी .. मेरी माँ !!

देहाती हूँ,जंगली साहस देती है।
इंसानी फ़रेब सिखाया नहीं,
बेबाक़ ज़िंदगी की तामील देती है... मेरी माँ !!

माँ

कविता

अमित प्रसून
वरिष्ठ प्रबंधक
डिजिटल बैंकिंग विभाग, प्रधान कार्यालय

माँ सदा से ऋणी हम तुम्हारे,
जन्म लिया है तेरे सहारे
तुमने मुझे जन्म दिया,
सारे कष्टों को सहन किया।
तुझमें सदा रहा अपनापन,
तेरे आंचल में बीता बचपन।
तुमने मुझे चलना सिखाया,
नन्हे हाथों को लिखना सिखाया।
दिया मुझे प्रारंभिक ज्ञान,
सिखाया मुझे दया त्याग एवं बड़ों का सम्मान।
तुझमें है अलौकिक शक्ति,
करूँ सदा मैं तेरी भक्ति।
तुम ही मेरी आधारशिला हो,
तुम ही मेरी पथ प्रदर्शिका।
माँ सदा से ऋणी हम तुम्हारे,
जन्म लिया है तेरे सहारे।

प्रशासनिक कार्यकुशलता का मार्गप्रदर्शक
कौटिल्य अर्थशास्त्र

विविध

अमरदीप कुलश्रेष्ठ
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय, पुणे

भारतवर्ष में शासन प्रणाली के विषय में लंबे समय से चिंतन मनन होता रहा है। हालांकि शासन प्रणाली का आदितम रूप जनजातीय प्रणाली की ओर संकेत करता है, परंतु कालांतर में यह राजतंत्र की प्रणाली में परिवर्तित हो गया। महत्त्व की बात यह है कि दो प्रवृत्तियाँ भारतीय प्रशासन प्रणाली में बद्धमूल हैं और युगानुयुग बलवती होती गई हैं। ये हैं : प्राथमिक इकाई के रूप में ग्राम का महत्व तथा केंद्रीकरण एवं विकेंद्रीकरण के परस्पर विरोधी प्रचलनों के मध्य सामंजस्य।

राज्य की पहली संकल्पना मनु के काल में उपलब्ध होती है जो हिंदुओं के अनुसार प्रथम राजा और मानवता के पुरोधा हैं। हम देख सकते हैं कि उस काल में कोई ऐसा समदर्शी न्यायकर्ता अथवा नेता नहीं था जो समाज के मुद्दों को सुलझा सके। दुसरी ओर, आम जन अराजकता से उकता चुके थे और कोई समाधान चाहते थे। कहा जाता है कि ऐसे में जनता ने मनु को राजकाज और अपनी देखभाल के लिए अपने प्रतिनिधि के रूप में चुना, उन्हें कर रूप में धन आदि से पूरित किया। मनु अपनी बौद्धिकता और दार्शनिक दृष्टिकोण के चलते बहुमान्य हुए और दिव्यता से परिपूरित माने गए।

रामायण और महाभारत काल में राजा को सर्वे सर्वा माना गया। शासकीय कार्य एवं शक्तियाँ सम्राट या राजा के हाथों में हुआ करती थीं। अपने महामात्य तथा प्रमुख पार्षदों के सहयोग से राजा अपने राज्य का संचालन करता था, जिसमें पुरोहित और सेनानायकों की एक महती भूमिका होती थी। अधिकांश मामलों में पुरोहित का स्थान क्षत्रिय के स्थान की अपेक्षा अधिक आदर और अधिकार रखता था। इनके अतिरिक्त राजा का एक मित्र मंडल भी होता था। प्रशासन के अन्य अंग कोषाध्यक्ष, परिचर, गुप्तचर, संदेशवाहक, सारथी तथा अधीक्षक होते थे।

जहाँ तक सांगठनिक ढांचे और कार्यों का प्रश्न है, वैदिक साहित्य, बौद्ध ग्रंथों, जैन साहित्य, धर्मशास्त्र, पुराणों, रामायण, महाभारत, मनुस्मृति, शुक्र नीति और अर्थशास्त्र आदि के रूप में शासन प्रणाली के वृहत संदर्भ भारतीय वाङ्मय में मौजूद हैं।

मौर्य काल तक आते आते भारत की प्रशासनिक प्रणाली अपेक्षाकृत विकसित अवस्था के रूप में निखर चुकी थी। गुप्त काल में, चंद्रगुप्त मौर्य और अशोक के शासन में इसमें और भी परिपक्वता देखने में आई।

क्षेत्रगत संकल्पना के आधार पर विभाजन भी शासन तंत्र का एक अन्यतम पहलू है। साम्राज्यों को प्रांतों में, प्रांतों को जिलों में और जिलों को नगरीय एवं ग्रामीण केंद्रों में विभक्त किया गया। राज्य प्रशासन को विषयवार अनेक संविभागों में बांटा गया था। वैदिक साहित्य और उसके बाद के स्रोतों से हम जान सकते हैं कि वंशानुगत परंपरा को एक व्यावहारिक स्वरूप दिया गया था और विभिन्न संविभागों के मध्य आपसी सहयोग और सौहार्द के बीज बोए गए थे।

कौटिल्य अर्थशास्त्र

कौटिल्य अर्थशास्त्र मौर्य काल के दौरान अस्तित्व में रहनेवाली अर्थशास्त्र और दंडनीति(राज्य प्रशासन और प्रबंधन) पर लिखा गया एक विलक्षण ग्रंथ है। यह 321 से 300 ईस्वी पूर्व के लगभग लिखा गया था तथा

इसे सन 1904 में खोजा और 1909 में श्री आर रामशास्त्री द्वारा प्रकाशित किया गया था। कौटिल्य अर्थशास्त्र में विभिन्न प्रकार के प्रकरणों का समावेश है, जिसमें महामात्य, वंशनुगतता, भ्रष्टाचार, स्थानीय शासन, पर्यवेक्षण, नैतिकता और कार्यविभाजन, अधिकारी-तंत्र (ब्यूरोक्रेसी) जैसे विषयों का व्यापक उल्लेख मिलता है।

कौटिल्य अर्थशास्त्र की एक विशेषता यह भी है एक स्वायत्त कृषि आधारित राज्य होते हुए भी उसमें लोककल्याण के पक्ष पर विशेष बल दिया गया है। यही वह स्थल है जहाँ वह अपने काल का अतिक्रमण कर जाता है। इस महान ग्रंथ में 15 अधिकरण(अध्याय), 150 भाग, 180 (प्रकरण) तथा 6000 सूत्रों का उल्लेख है।

कौटिल्य ने राज्य को एक जीवंत इकाई के रूप में देखा था जो मानवीय संवर्धन के लिए अनिवार्य होती है। उनके अनुसार राज्य आठ तत्त्वों से निर्मित होता है: राजा, मंत्री, देश, दुर्ग, कोश, सैन्य, मित्र और शत्रु। इसके साथ ही राज्य का मूलभूत दायित्व कानून एवं व्यवस्था बनाए रखना, दोषियों को दंड देना और प्रजाजनों का संरक्षण करना था।

संपूर्ण साम्राज्य को एक मुख्य गृह-प्रांत राजधानी क्षेत्र या प्रशासनिक इकाई, जो केन्द्र शासन के प्रत्यक्ष नियंत्रण में रहे, तथा चार या पाँच बाहरी प्रांतों(राज्यों) में विभाजित किया गया था जो अलग-अलग राज्यपालों के नेतृत्व में संचालित होते थे। इस सामंती-संघीय प्रकार की राजव्यवस्था में प्रत्येक प्रांत को काफी स्वायत्तता मिली हुई थी। इन सभी प्रांतों और उनके उप-प्रांतों, जिलों और नगरीय-ग्रामीण उपक्षेत्रों में नीतिनिर्वहन के लिए बनाए गए संविभागों से संबंधित विशेषज्ञ उपलब्ध थे जो मौर्यकाल में प्रभावी भी थे। उल्लेखनीय बात यह है कि संभ्रांत वर्ग को पदीय नियुक्तियों में वरीयता दी जाती थी और इसकी नियुक्ति प्रक्रिया लगभग वर्तमान में मौजूद प्रणाली के ही समान है। ठीक आज के मंत्रिमंडल सचिवालय के समान सभी शासकीय लेनदेन एवं अभिलेखों का रखरखाव केंद्रगत एक निकाय के द्वारा किया जाता था।

जिस तरह आज के समय की कार्मिक प्रणाली में हम नियुक्ति, वेतन, अवकाश, सेवानिवृत्ति राशि(पेन्शन) जैसी अवधारणाएँ देखते हैं, ठीक इसी प्रकार के उल्लेख पहले के प्रशासनिक साहित्य में भी मिलते हैं। कौटिल्य अर्थशास्त्र में मंत्रियों और शासकीय कर्मचारियों की सुनिश्चित नियुक्ति प्रणाली एवं वेतन के अलावा सेवा के स्थायित्व और वेतनवृद्धि आदि का भी उल्लेख मिलता है। समय समय पर स्थानांतरण का भी प्रावधान किया गया है ताकि भ्रष्टाचार और शासकीय निधि का गलत उपयोग न हो सके।

कौटिल्य ने कहा कि राजा एक पिता की तरह है और लोग अथवा प्रजाजन उसकी संतान के समान हैं। कौटिल्य का यह दृष्टिकोण आधुनिक समय में प्रचलित कल्याणकारी राज्य की अवधारणा में सन्निहित है। भ्रष्टाचार सहन नहीं किया जाना था और उस पर कड़ाई से कार्रवाई करना विहित था। गलत प्रकार से अर्जित धन को राज्य ले लेता था। इस तरह हम देख सकते हैं कि उस समय व्यक्त किए गए वैचारिक सुचिंतन हमारी आज की लोकतांत्रिक प्रणाली में भी जगमगा रहे हैं। भ्रष्टाचार के प्रति तीखा प्रतिवाद न केवल स्तुत्य है बल्कि पूर्णरूपेण अनुकरणीय है। यह धारणा भारत भूमि पर बहुत पहले से लिपिबद्ध कर दी गई थी कि केवल राजा को प्रिय हो जाने से कोई विचार कार्यान्वयन के योग्य नहीं हो जाता। जो बहुजन की इच्छा हो वही वरीय है और उसी का अनुसरण होना योग्य है। कौटिल्य ने इसे केवल लिखा नहीं था बल्कि अपने जीवन से भी अभिप्रमाणित किया था।

अधिकारियों के नियुक्त किए जाने की कौटिल्य की तत्कालीन पद्धति भी विलक्षण थी। एक बार मूलभूत अर्हता के पूरा हो जाने पर अधिकारियों की नियुक्ति के मामले में कौटिल्य पवित्रता, धन अथवा राजस्व, वासना और भय - इनके आधार पर परीक्षण करते थे।

(स्रोत: यह लेख वेबसाइट www.dhakuakhanacollege.ac.in पर उपलब्ध सामग्री से ली गई सूचनाओं के आधार पर रचा गया है।)

पंजाबी स्वाद

पंजाब का स्थानीय व्यंजन प्राचीन सिंधु घाटी सभ्यता के समय से प्रचलित कृषि और कृषि जीवन शैली से काफी प्रभावित है। तंदूरी चिकन के समान व्यंजन भारत के कांस्य युग के दौरान हड़प्पा सभ्यता के दौरान मौजूद रहे होंगे । पुरातत्वविद् प्रोफेसर वसंत शिंदे के अनुसार, तंदूरी चिकन के समान व्यंजन का सबसे पहला प्रमाण 3000 ईसा पूर्व का है जो हड़प्पा सभ्यता में पाया जाता है। हड़प्पा स्थलों पर प्राचीन ओवन मिले हैं जो पंजाब राज्य में उपयोग किए जाने वाले तंदूर के समान हैं। मुर्गे की हड्डियों के जले निशानों वाले भौतिक अवशेष भी खुदाई में मिले हैं। बासमती चावल पंजाब की स्वदेशी किस्म है और इसका उपयोग करके विभिन्न मांस और सब्जी- आधारित चावल व्यंजन विकसित किए गए हैं। पंजाब में खाना पकाने की यह शैली 1947 के विभाजन के बाद पूरे भारत में लोकप्रिय हो गई। ग्रामीण पंजाब में, सामुदायिक तंदूर होना आम बात है, जिन्हें पंजाबी में काठ तंदूर भी कहा जाता है।

पंजाब के कुछ प्रसिद्ध व्यंजन :

पंजाब गेहूं, चावल और डेयरी उत्पादों का प्रमुख उत्पादक है। ये उत्पाद पंजाबी लोगों का मुख्य आहार भी हैं। यहाँ डेयरी उत्पादों का सबसे अधिक प्रति व्यक्ति उपयोग होता है।

छोले भटूरे : यह पंजाब की खास व्यंजनो में से एक है। किण्वित मैदा का उपयोग भटूरा बनाने के लिए किया जाता है, और छोले मसाला चना की तरह होते हैं लेकिन थोड़े अधिक मसालेदार। इसे गरमा-गरम प्याज़ और अचार के साथ परोसा जाता है।

मक्के की रोटी: ये सारी दुनिया में मशहूर है। सरसों के साग के बिना मक्की की रोटी अधूरी है। मक्के की रोटी को कॉर्नफ्लोर, थोडा सा मैदा और कद्दुकस की हुई मूली को बाइंडिंग एजेंट के रूप में बनाया जाता है। इसे सरसों का साग और गुड़ के साथ परोसा जाता है।

सरसों का साग : यह मक्की की रोटी के साथ खाया जाता है। सरसों का साग और पंजाब अभिन्न हैं । यह व्यंजन सर्दियों में परोसा जाता है। इसे स्वस्थ और स्वादिष्ट बनाने के लिए इसमें पालक और सरसों के पत्ते डाले जाते हैं। साग पर ऊपर से एक चम्मच घी डालकर मक्की की रोटी के साथ खाया जाता है।

दाल मखनी : दाल मखनी पंजाब सबसे लोकप्रिय व्यंजनों में से एक है। इसमें बड़ी माला में घी, अदरक लहसुन का पेस्ट, मिर्च और टमाटर आधारित सॉस के साथ लाल राजमा और साबुत काली दाल शामिल हैं। इस व्यंजन के ऊपर क्रीम या दही डाला जाता है और इसे नान, भात या रोटी के साथ परोसा जाता है।

पंजाबी पकोड़ा कढ़ी : दही और बेसन को मिर्च,अदरक, लहसुन, मेथी, जीरा और सरसों के मिश्रण से तैयार किया जाता है। पंजाबी कढ़ी अपनी विशिष्टता के लिए प्रसिद्ध है क्योंकि वे इसमें पकौड़े मिलाते हैं। पकौड़ा बेसन, प्याज, पालक या मेथी के पत्तों से बनाया जाता है। इसे भात या रोटी के साथ परोसा जाता है।

शक्कर पारा सूजी : मैदा और हल्की चीनी से बना एक मीठा नाश्ता है। इसे एक अलग स्वाद के लिए मोटे चीनी या सूखे नारियल के साथ भी लेपित किया जा सकता है। शकर पारा एक तली हुई पंजाबी डिश है। ●

संसदीय राजभाषा समिति

गतिविधियाँ

दिनांक 16.06.2023 को संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा अंचल कार्यालय लखनऊ का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण में बैंक की ओर से श्री मनीष कुमार महाप्रबंधक, श्री अजयेंद्रनाथ त्रिवेदी मुख्य प्रबंधक राजभाषा प्रधान कार्यालय, श्री चिन्मय कुमार साहू, अंचल प्रमुख लखनऊ, सुश्री मिलन दुबे, उप अंचल प्रमुख लखनऊ, डा शिल्पी शुक्ला, वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा लखनऊ ने प्रतिभागिता की। समिति के उपाध्यक्ष श्री भर्तृहरि महताब जी एवं अन्य सदस्यों ने राजभाषा के क्षेत्र में बैंक द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना की।

दिनांक 23.05.2023 को संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा अंचल कार्यालय रायपुर का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण में बैंक की ओर से श्री विजय कुमार महाप्रबंधक, श्री अजयेंद्रनाथ त्रिवेदी, मुख्य प्रबंधक, राजभाषा, प्रधान कार्यालय, अंचल प्रमुख रायपुर, श्रीमती लकि नायक एवं श्री सुभाष चंद्र साह, मुख्य प्रबंधक,राजभाषा रायपुर ने प्रतिभागिता की। निरीक्षण सफलतापूर्वक संपन्न होने के पश्चात माननीय संसदीय समिति के उपाध्यक्ष माननीय श्री भर्तृहरि महताब के कर कमलों से रायपुर अंचल की अंचल प्रमुख श्रीमती लकि नायक ने प्रमाणपत्र प्राप्त किया।

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा 20 अप्रैल, 2023 को अंचल कार्यालय, शिमला का निरीक्षण किया गया। यह निरीक्षण बहुत ही सुव्यवस्थित ढंग से संपन्न हुआ। माननीय सदस्यों द्वारा अंचल कार्यालय, शिमला के राजभाषा कार्यनिष्पादन की सराहना की गई और यथावश्यक कुछ निदेश भी दिए गए। प्रधान कार्यालय से श्री विजय कुमार, महाप्रबंधक तथा राजभाषा विभाग से मुख्य प्रबंधक सम्मिलित हुए। अंचल कार्यालय, शिमला से अंचल प्रमुख श्री प्रदीप आनंद केसरी एवं राजभाषा अधिकारी श्री नरेंद्र कुमार आजाद ने प्रतिभागिता की।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), कोलकाता की 75वीं छमाही समीक्षा बैठक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), कोलकाता की 75वीं छमाही समीक्षा बैठक 26 मई, 2023 दिन शुक्रवार को यूको बैंक, प्रधान कार्यालय के बोर्ड कक्ष में आयोजित हुई। उक्त बैठक की अध्यक्षता यूको बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी एवं नराकास (बैंक), कोलकाता के अध्यक्ष श्री सोमा शंकर प्रसाद ने की। बैठक में श्री राजेन्द्र कुमार साबू, कार्यपालक निदेशक, यूको बैंक तथा सभी सदस्य बैंकों/ बीमा कंपनियों/वित्तीय संस्थाओं के कार्यालय प्रमुखों एवं उनके राजभाषा अधिकारियों/ प्रभारियों ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त श्री निर्मल कुमार दुबे, कार्यालयाध्यक्ष, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्व), कोलकाता तथा डॉ. सुनील कुमार लोका, उप निदेशक, हिंदी शिक्षण योजना, कोलकाता भी उपस्थित रहे।

सर्वोच्च राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 158 वीं बैठक

दिनांक 09.06.2023 को प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री अश्वनी कुमार जी की अध्यक्षता में बैंक की सर्वोच्च राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 158 वीं बैठक संपन्न हुई।

हिंदी कार्यशाला

अंचल कार्यालय

गतिविधियाँ

अंचल कार्यालय, लखनऊ

अंचल कार्यालय, सिलीगुड़ी

अंचल कार्यालय, गुवाहाटी

अंचल कार्यालय, इंदौर

हिंदी कार्यशाला

प्रधान कार्यालय

श्री मनीष कुमार (महाप्रबंधक) हिंदी कार्यशाला में राजभाषा नोडल अधिकारियों को संबोधित करते हुए

यूको बैंक, प्रधान कार्यालय द्वारा सभी विभागों के नोडल अधिकारियों के लिए **महाप्रबंधक, मानव संसाधन प्रबंधन, कार्मिक, प्रशिक्षण एवं राजभाषा श्री मनीष कुमार** की अध्यक्षता में दिनांक 26 जून, 2023 को प्रधान कार्यालय के बोर्ड कक्ष में एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

अपने संबोधन में महाप्रबंधक महीदय ने कहा कि राजभाषा का कार्यान्वयन करना हम सभी का परम दायित्व है तथा उसका पूर्ण अनुपालन किया जाना अनिवार्य है ।

भारत सरकार के आदेशानुसार प्रत्येक तिमाही में राजभाषा हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जाता है ताकि राजभाषा का कार्यान्वयन सुगमतापूर्वक हो सके। हमें आंतरिक कार्यों पर विशेष बल देना है।

सभा को संबोधित करते हुए **महाप्रबंधक, श्री मनीष कुमार** ने कहा कि भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में दिया जानेवाला सर्वोच्च पुरस्कार **"राजभाषा कीर्ति" पुरस्कार वित्तीय वर्ष 2020-21 के लिए-प्रथम** और पुनः वित्तीय वर्ष 2021-22 के लिए प्रथम पुरस्कार से हमारे कार्यालय को सम्मानित किया गया। इसका सारा श्रेय हमारे सभी स्टाफ़ सदस्यों को जाता है।

राजभाषा नोडल अधिकारियों की हिंदी कार्यशाला में अपना वक्तव्य पेश करते हुए मुख्य प्रबंधक, राजभाषा श्री अजयेंद्रनाथ त्रिवेदी।

प्रधान कार्यालय के राजभाषा नोडल अधिकारियों का समूह चित्र

बैंकिंग गतिविधियाँ

एसएलबीसी ओडिशा द्वारा भुवनेश्वर में छठे रोजगार मेले का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। माननीय कैबिनेट मंत्री, भारत सरकार, श्री धर्मेंद्र प्रधान द्वारा 229 नियुक्ति पत्र सौंपे गए। मैडम सुषमा किंडो, निदेशक, डीएफएस, सभी सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के नियंत्रक प्रमुख एवं कार्यक्रम में भाग लेने वाले विभागों के राज्य प्रमुख भी उपस्थित थे।

उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ ने अंचल प्रमुख श्री सौरभ सिंह एवं अन्य बैंक अधिकारियों और सार्वजनिक गणमान्य व्यक्ति की उपस्थिति में गोरखपुर में सामुदायिक रसोई की आवश्यकता को पूरा करने के लिए कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व योजना के तहत अंचल कार्यालय अयोध्या द्वारा प्रायोजित स्वचालित डिश वॉशर मशीन का लोकार्पण किया ।

एसएलबीसी, यूको बैंक, शिमला द्वारा शिमला में छठे रोजगार मेले का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया, जहां 135 नवनियुक्तों को श्री अनुराग सिंह ठाकुर, माननीय कैबिनेट मंत्री, सूचना और प्रसारण, युवा मामले और खेल, भारत सरकार द्वारा नियुक्ति पत्र सौंपे गए। भारत की कुल 210 युवाओं को 18 विभिन्न विभागों में रोजगार उपलब्ध कराया गया।

भारत के सम्मानित महावाणिज्य दूतावास, हांगकांग की सुश्री सतवंत खनालिया की उपस्थिति में यूको बैंक हांगकांग में अंतर्राष्ट्रीय मिलेट वर्ष का उत्सव मनाया गया।

'जनता से जुड़ना' अभियान के तहत यूको कॉन्ट्रैक्टर, यूको इक्विपमेंट फाइनेंस और यूको एमएसएमई प्रॉपर्टी ऋण जैसी 3 योजनाओं के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए कोलकाता में केएमडीए सिविल कॉन्ट्रैक्टर्स वेलफेयर एसोसिएशन के सहयोग से यूको बैंक द्वारा आयोजित "कॉन्ट्रैक्टर्स मीट"।

जनता से जुड़ना अभियान के तहत बैंक की टेक्सटाइल नीति और एमएसएमई से संबंधित अन्य ऋणों के बारे में जागरूकता बढ़ाने करने के लिए यूको बैंक द्वारा सूरत में आयोजित "टेक्सटाइल मीट" की एक झलक।

पत्र मिला

यूको अनुगूँज पत्रिका, अंक-2 (अक्तूबर-मार्च, 2023) में प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी महोदय का संदेश हम सभी यूकोजन के लिए प्रेरणास्त्रोत है। वास्तव में, किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हमें उत्साह, उमंग, जोश, ऊर्जा और ज़िंदादिली से कार्य करना होता है। सर्वोत्कृष्ट ग्राहक सेवा हमारे व्यवसाय वृद्धि का मूलमंत्र है। हमें ग्राहकों को बैंकिंग सेवा उनकी भाषा में देना होगा ताकि वे हमसे सदैव जुड़े रहें। सफलता को कायम रखने के लिए कार्यों में गुणवत्ता अनिवार्य है साथ ही साथ हमें नमोन्वेषी विचारों के साथ अपने कार्यों को मूर्त रूप देने से ही सफलता अर्जित हो सकती है। एमडी एवं सीईओ महोदय के विचार हम सभी के लिए अनुकरणीय हैं।

देबब्रत महान्ति
उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख, बालासोर

यूको अनुगूँज के नए अंक (अक्तूबर -मार्च 23)के लिए धन्यवाद। इसमें प्रकाशित सभी लेख अच्छे हैं। इसका कलेवर और बनावट मन में देशभक्ति की चिंगारी जला देती है । श्री जानकी वल्लभ शास्त्री का नाम भर सुना था। इस पत्रिका के माध्यम से उनकी कविता पढ़ी। समग्र रूप से कहूं तो पत्रिका न केवल हमें अपने बैंक की गतिविधियों से जोड़ने में सहायक है अपितु इसकी रचनाएं निजी जीवन के लिए भी प्रेरणादायक हैं।

वीणा कुमारी
अंचल प्रमुख, वाराणसी अंचल

बैंक की हिंदी गृह पत्रिका 'अनुगूँज' का 'आजादी का अमृत महोत्सव' विशेषांक अक्टूबर – मार्च, 2023 अब नये नाम 'यूको अनुगूँज' के रूप में मनमोहक साज – सज्जा के साथ प्राप्त हुआ। पत्रिका पढ़कर प्रसन्नता हुई। पत्रिका में प्रकाशित माननीय प्रबंधक निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, कार्यपालक निदेशक द्वय एवं महाप्रबंधक, राजभाषा का संदेश मनोयोगपूर्वक पढ़ा। इसे पढ़कर उमंग एवं ऊर्जा का संचार हुआ । सभी संदेशों में बैंकिंग एवं राजभाषा के क्षेत्र में सफलता प्राप्ति के सूत्र निहित हैं ।
संपादकीय गरिमा के अनुरूप भाव एवं भाषा से समृद्ध है, जिसमें निज भाषा की साधना से बैंकिंग लक्ष्य की सिद्धि की राह दिखाई गई है ।

अपूर्व कर्ण
उप अंचल प्रमुख, अंचल कार्यालय, भागलपुर

यूको अनुगूँज का अक्तूबर-मार्च 2023 अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका का प्रस्तुतिकरण अत्यंत प्रभावशाली है। पत्रिका की साज-सज्जा और आवरण पृष्ठ काफी आकर्षक है। आजादी का अमृत महोत्सव: बैंक में राजभाषा के स्वर्णिम 50 वर्ष विशेष लेख माला, अपने बैंक में अपनी भाषा की निरंतर प्रगति और राजभाषा की बढ़ती हुई ताकत के द्योतक है। आशा है अनुगूँज के भविष्य में आने वाले अंकों में बैंकिंग से संबंधित जानकारी से परिपूर्ण लेखों को भी पढ़ने का अवसर मिलेगा।

नीरज कुमार सिंघल
उप अंचल प्रमुख, पुणे अंचल

यूको अनुगूँज का अक्तूबर-मार्च 2023 का यह नवीनतम अंक पिछले अंकों की तुलना में अधिक आकर्षक है, पृष्ठ की गुणवत्ता में भी सुधार हुआ है। कुल मिलाकर ज्ञानवर्धक लेखों से परिपूर्ण एक उत्तम पत्रिका है । पत्रिका के विषय में मेरा विनम्र सुझाव है कि पत्रिका में बैंक के नवीनतम वित्तीय परिणामों की जानकारी दी जा सकती है। साथ ही बैंक की नवीनतम योजनाओं की संक्षिप्त जानकारी भी पत्रिका के माध्यम से पाठकों तक पहुंचाई जा सकती है।

गौरव जैन
प्रबंधक ,अंचल कार्यालय, इंदौर

यूको अनुगूँज (अक्टूबर-मार्च-2023) काफी ज्ञानवर्धक अंक है । जहाँ एक तरफ प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी महोदय का संदेश बेहतर सेवा देने के लिए प्रेरित करता है वहीं कार्यपालक निदेशक महोदय का संदेश लक्ष्य प्राप्ति के लिए ऊर्जा प्रदान करता है । "आज़ादी का अमृत महोत्सव : बैंक में राजभाषा के स्वर्णिम 50 वर्ष" विषय पर अमित कुमार सरवर का लेख काफी सराहनीय है । मनीष त्रिपाठी द्वारा लिखा गया लेख "आवास ऋण और कारोबार के अवसर" ज्ञान में वृद्धि करता है । इस अंक के संपादक मण्डल को बधाई ।

संजीत कुमार झा
वरिष्ठ प्रबन्धक, शाखा - दरभंगा

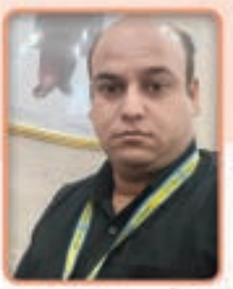

यूको अनुगूँज (अक्तूबर-मार्च, 2023) काफी रोचक अंक है । कार्यपालकों का संदेश ऊर्जादायक है । इस अंक में प्रकाशित सभी लेख, गजल, व पुस्तक-चर्चा रोचक व ज्ञानवर्धक हैं । सुधीर सजल की दोनों गजलें काफी अच्छी हैं । "आज़ादी का अमृत महोत्सव : बैंक में राजभाषा के स्वर्णिम 50 वर्ष" विषय पर लिखे गए सभी लेख काफी सराहनीय हैं। मनीष त्रिपाठी का बैंकिंग लेख काफी ज्ञानवर्धक है। इस अंक के संपादक मण्डल को बधाई ।

प्रकाश कुमार मिश्रा
वरिष्ठ प्रबन्धक, अंचल कार्यालय, पटना

श्री अभिजीत दास जी के लेख का मैं उल्लेख करना चाहूँगा। उन्होंने हिंदी की विकास यात्रा को सरल भाषा में समेटा है। इसी प्रकार श्री अमित सरवर जी के लेख में हमारे बैंक द्वारा हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए अपनाई गई कार्ययोजना और बैंक की उपलब्धियों को बताया गया है। इसके अतिरिक्त श्री सुधीर साहू जी की ग़ज़लों के समावेश ने इस अंक को और भी आकर्षक बना दिया है। इस अंक को पढ़ कर मुझे गौरव का अनुभव हो रहा कि हमारा बैंक किस प्रकार से राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अनवरत लगा हुआ है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ भी सुरुचिपूर्ण एवं आकर्षक है।

श्री अंकित कुमार वर्मा
अंचल कार्यालय, लखनऊ

यूको अनुगूँज का अक्तूबर-मार्च 2023 का यह नवीनतम अंक पिछले अंकों की तुलना में अधिक आकर्षक है, पृष्ठ की गुणवत्ता में भी सुधार हुआ है। कुल मिलाकर ज्ञानवर्धक लेखों से परिपूर्ण एक उत्तम पत्रिका है। 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' विषय के अंतर्गत प्रकाशित सभी आलेख सार्थक, सारगर्भित और विषयानुकूल हैं। देशांतर के अंतर्गत जॉन कीट्स की कविता ' ओड टू ऑटम ' में शरद ऋतु का अत्यंत मनमोहक चित्रण है। विभिन्न अंचलों में राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित आयोजित विविध गतिविधियाँ का संकलन अति सुंदर एवं मनोहारी है। पत्रिका के कुशल संपादन के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई।

प्रदीप चतुर्वेदी
वरिष्ठ प्रबंधक, अंचल कार्यालय, नई दिल्ली

यूको अनुगूँज अक्तूबर- मार्च छमाही का अंक मैंने पढ़ा। इस अंक के कुछ लेख मुझे अत्यधिक पसंद आये। डा. रजनी गुप्ता का विशेष लेख आजादी का अमृत महोत्सव : बैंक में राजभाषा के स्वर्णित 50 वर्ष जिसमें उन्होंने सरकारी कार्यालयों/ बैंकों, उपक्रमों में हिन्दी का रूप किस प्रकार बदल रहा है इसका बहुत ही सटीक विश्लेषण किया है। उनका यह कहना बिल्कुल सत्य है कि हिंदी के गद्य रूपों और बोलचाल में अंग्रेजी का इस हद तक समावेशन बिल्कुल गैर जरूरी है कि वह "हिंग्रेजी" लगने लगे। आज हिंदी में लिखी गई रचनाओं को हम फोन के माध्यम से साझा करते हैं तो ये रचनाऐं अनगिनत लोगों तक पहुंचती है जिससे हिन्दी का प्रचार-प्रसार तीव्र गति से हो रहा है।

वरिंदर सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक, अंचल कार्यालय , करनाल

यूको अनुगूँज की इस पत्रिका में आजादी का अमृत महोत्सव शामिल किया गया है जो हमारे देश की आजादी के सफर की यादों को ताजा कर रहा है। इसके साथ-साथ बैंकिंग कार्यप्रणाली पर भी लेख दिए गए है। अनुगूँज में बैंकिंग कर्मियों ने अपनी कविताएं, जीवनियां और अपने विचारों को साझा किया है जो कि बहुत ही ज्ञानवर्धक है। सभी अंचलों में आयोजित कार्यक्रमों की सम्मिलित झलकियां बहुत ही आकर्षक है। अनुगूंज एक अच्छी पत्रिका है जिसे पढ़ने का मन बार-बार होता है।

श्रीमती सुषमा देवी
वरिष्ठ प्रबंधक ,अंचल कार्यालय, जालंधर

आपके विभाग द्वारा प्रेषित "यूको अनुगूँज"। मुझे यह पत्रिका का यह अंक अत्यंत रोचक एवं ज्ञानवर्धक लगा। पत्रिका मे आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत विशेष लेखों में पूर्व अंचल प्रबन्धक श्री अभिजीत दास द्वारा रचित आलेख "बैंक में राजभाषा के स्वर्णिम 50 वर्ष" राजभाषा हिन्दी की सतत प्रगति की यात्रा को दर्शाता है। मुख्यतः प्रत्येक आलेख के अंत में जो छोटी-छोटी लघुकथाएं एवं वाक्यांश है वे पत्रिका को और भी आकर्षक बनाती है। भाषा सौहार्द पृष्ठ जिस पर बांग्लाभाषी श्रीमती सुजीता भट्टाचार्जी की कविता है वह भी काफी सराहनीय है। कुल मिलाकर जानकीवल्लभ से लेकर जॉन कीट्स तक पूरी पत्रिका रोचक सम्मिश्रण है जो राजभाषा से संबंधित कई आवश्यक तथ्य आमजनों तक पहुंचाने के लिए माध्यम का कार्य करती है। आपकी पूरी टीम को पत्रिका के प्रकाशन की कोटि-कोटि बधाइयाँ एवं आगामी अंकों के लिए शुभकामनायें। आशा करते है अगला अंक इससे भी ज्यादा रोचक, ज्ञानवर्धक एवं जानकारी से भरपूर होगा।

शिवम मिश्रा
वरिष्ठ प्रबन्धक,सिलीगुड़ी अंचल

विशेषांक का आवरण पृष्ठ बहुत ही आकर्षक तथा समयोचित है जो हमारे पूर्व स्वतंत्रता सेनानियों तथा महापुरुषों के प्रति अटूट सम्मान को व्यक्त करता है। आचार्य श्री जानकीवल्लभ शास्त्री की कविता जीवन में आशा/उम्मीद के चिरंतन महत्व के प्रति सद्भाव तथा विश्वास की प्रेरणा देता है । आदरणीय अभिजीत दास का लेख इस विशेष अंक को विशेष गरिमा प्रदान करता है। साथ ही राजभाषा विभाग की 50 वर्षों की उत्तरोत्तर यात्रा का संक्षेप में अनुभव कराता है। श्री अमित राज, अंचल प्रबन्धक, भोपाल का लेख श्री दास के लेख की विस्तारित पृष्ठभूमि का वर्णन करता है। इस सराहणीय अंक को मूर्त स्वरूप देने के लिए संपादकीय मण्डल तथा सभी सदस्यों के साथ-साथ सभी लेखकों का सहयोग प्रशंसनीय है ।

मोरेश्वर खापेकर
मुख्य प्रबंधक, मुंबई अंचल

आपके कार्यालय की गृह पत्रिका अनुगूँज वर्ष : 12 , अंक 2 , अक्तूबर – मार्च 2023 अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका के गूंज से ही भारत की संस्कृति की झलक मिलती है और यह पत्रिका को पठनीय बनाने के लिए एक चुंबकीय शक्ति पैदा करती है। पत्रिका के प्रत्येक पृष्ठ विशेष रूप से महाप्रबंधक महोदय श्री मनीष कुमार जी का संदेश जिस तरीके से पत्रिका अनुगूँज के बैंकिंग और भारत की संस्कृति सहित विभिन्न आयामों के बीच एक सेतु का निर्माण करते हैं , यह अपने आप में बेजोड़ है। किसी भी कोण से देखा जाए तो पूर्व भारत से इस तरह की पत्रिका का प्रकाशन बहुत ही प्रेरणादायी है।

अमित कुमार सरवर
वरिष्ठ प्रबन्धक , रायपुर अंचल

सुंदर साज-सज्जा और उच्च गुणवत्ता के कागज पर छपी अत्यंत चित्ताकर्षक आवरण में लिपटी पत्रिका। आवरण के अंत:पृष्ठों पर एक ओर स्वाभिमानी कवि आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री (जिन्होंने पद्मश्री का सम्मान भी अस्वीकार कर दिया था) तो दुसरी तरफ प्रकृति प्रेमी कवि जॉन कीट्स। कवि परिचय के साथ-साथ दोनों कवियों की एक एक सुंदर रचना। सृजीता भट्टाचार्जी की कविता और सुधीर सजल की गजलें -इस अंक को साहित्यिक सुवास देती है। कुल मिलाकर यह एक बेहद खूबसूरत, पठनीय और संग्रहणीय पत्रिका बन पड़ी है।

नील कमल
वरिष्ठ प्रबन्धक, अंचल कार्यालय, बेगूसराय

डैफोडिल्स
Daffodils

मैं अकेला भटका
जैसे कोई बादल
उड़ता हो घाटियों और पहाड़ों पर
अचानक, दिखे समूह-नृत्य में
स्वर्णाभ डेफोडिल फूल
समीर के साथ कांपते-नाचते
झील के पास, पेड़ तले ॥

भास्वर सितारों की तरह सतत
जैसे आकाश गंगा में चमकते
एक विशाल धारा में अनंत
किसी उपसागर के साथ लगे
एक साथ दिखे कोई दस हजार
मोद में नाचते, सर हिलाते ! !

पास थीं लहरें नृत्यमान जिन्हें
मात दे रही थीं ये उल्लासित तरंगें
एक कवि के लिए और क्या होगा इससे अभिराम
जब हो साथ में ऐसा मनमोहक समूह
मैंने देखा और देखता ही रहा, निर्विचार
जीवन में क्या अपवर्ग लाए ये फूल प्यारे!!

प्रायः जब मैं सोफे पर होता हूँ
कभी शून्य, कभी उन्मन,
वे मेरे अंतर में झलक उठते हैं
यही है मेरे एकांत का आनन्द।
और तब मेरा हृदय खुशियों से भरता
और डेफोडिल्स के साथ नाच उठता है ॥

विलियम वर्डस्वर्थ

विलियम वर्ड्सवर्थ का जन्म 7 अप्रैल 1770 को कॉकरमाउथ, कंबरलैंड, इंग्लैंड में हुआ था। उन्होंने सेंट जॉन्स कॉलेज, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में पढ़ाई की। वे प्रकृति के प्रेमी थे और ख़ाली समय के दौरान प्रकृति निरीक्षण करते थे।

वर्ड्सवर्थ को 'लिरिकल बैलाड्स' के लिए जाना जाता है, जो सैमुअल टेलर कोलरिज के साथ मिल कर लिखा गया है। इसके अलावा उनकी रचना द प्रील्यूड है जो एक कवि के मानस के विकास का वर्णन करती है। प्रकृति के मोहक रूप के प्रति वर्ड्सवर्थ समर्पित थे।

1797 में अंग्रेजी साहित्य में रोमांटिक काव्यधारा के सुस्पष्ट चिह्न दिखे। विलियम वर्ड्सवर्थ इस शैली के संस्थापकों में थे । उनकी पहचान ज्ञानमीमांसाकार कवि के रूप में है। उन्होंने मनुष्य और प्रकृति के संबंधों पर लिखा । उन्होंने सामान्य और रोजमर्रा की शब्दावली के प्रयोग तथा और बतकही की भाषा में कविता लेखन का समर्थन किया ।

निधन : 23 अप्रैल 1850

इस कविता का विषय प्रकृति और मानवता, स्मृति और कल्पना है। कवि मानवता का प्रतीक है और डैफोडिल प्रकृति का प्रतीक है। कविता में मानवता प्रकृति का एक अंग है और मनुष्य प्रकृति के साथ एक मजबूत बंध में बंधा है। यह बंध कृत्रिम नहीं बल्कि वास्तविक मानवीय उल्लास का स्रोत है।

हमारी स्टाफ सदस्य पौलमी बैनर्जी, मुख्य प्रबंधक, कांदिवली ईस्ट शाखा, मुंबई की तूलिका से

यूको बैंक UCO BANK
(भारत सरकार का उपक्रम) (A Govt. of India Undertaking)

मुद्रक : पापुलर बाइंडर एंड को, 100/5/1A, एस एन बनर्जी रोड ,कोलकाता : 14, फ़ोन : 9007682556, ई- मेल : popular_binder@yahoo.in